संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०२१
वर्ष : ३१ अंक : २ (निरंतर अंक : ३४४)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

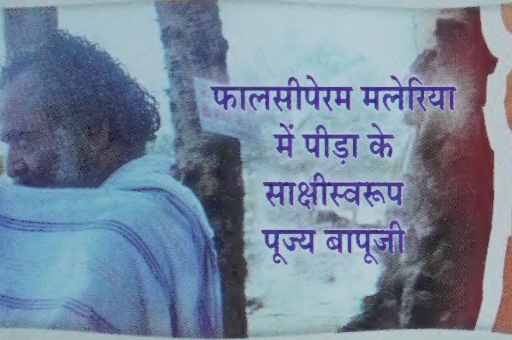
ष्ट-मुसीबतों को पैरों तले कुचलने की कला

बापूजी के जीवन-प्रसंग पढ़ें पृष्ठ १३ पर



गोवंश के प्रति पूज्य बापूजी का अपार स्नेह रहा है।

ाँड़ के धक्के से हाथ उलटा होकर टूट
उस समय असंख्य भक्त, दर्जनों
शिष्य मेरे काम में नहीं आये। सद्गुरु
हुआ ज्ञान काम में आया कि पीड़ा हो
को हो रही है ध्यान से देखना!''



फालसीपेरम मलेरिया में पीड़ा के साक्षीस्वरूप पूज्य बापूजी

अंग्रेजी दवाओं का इतना दुष्प्रभाव कि
ीं सकें, सो नहीं सकें, लेट नहीं सकें,
ायें। पीड़ा ऐसी कि उसके आगे
की पीड़ा कुछ भी नहीं है। चिड़िया
रे तो मानो एक तलवार लग गयी
ड़ा होती थी।''



कारावास काल में विभिन्न शारीरिक कष्टों को झेलते हुए पूज्य बापूजी



पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

संत-महापुरुषों व अवतारों के जीवन में तो प्रतिकूल परिस्थितियों की खूब अधिकता देखने में आती है

लेकिन वे महापुरुष विषमता और शोक से दूर रहते हैं इसका एकमात्र कारण गुरुज्ञान है।



अन्याय की भी एक सीमा होती है। जब उसका अतिक्रम करते हैं तो विनाश-ही-विनाश देखने को मिलता है।

- स्वामी अमृतानंदजी महाराज, उदासीन अखाड़ा



समाज में अंतिम पंक्ति का व्यक्ति भी किस प्रकार धार्मिक और साधना-परायण हो सकता है इस पर आशारामजी बापू ने बहुत बल दिया।

- श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर नवलकिशोरदासजी, महामंत्री, संत महामंडल





नित्य गुरुज्ञान
रमण करो !

– पूज्य बापू

[illegible] उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। राग-द्वेष अनादि काल से है, [illegible] झकझोरता होगा लेकिन तुम अपना लक्ष्य बना लो कि

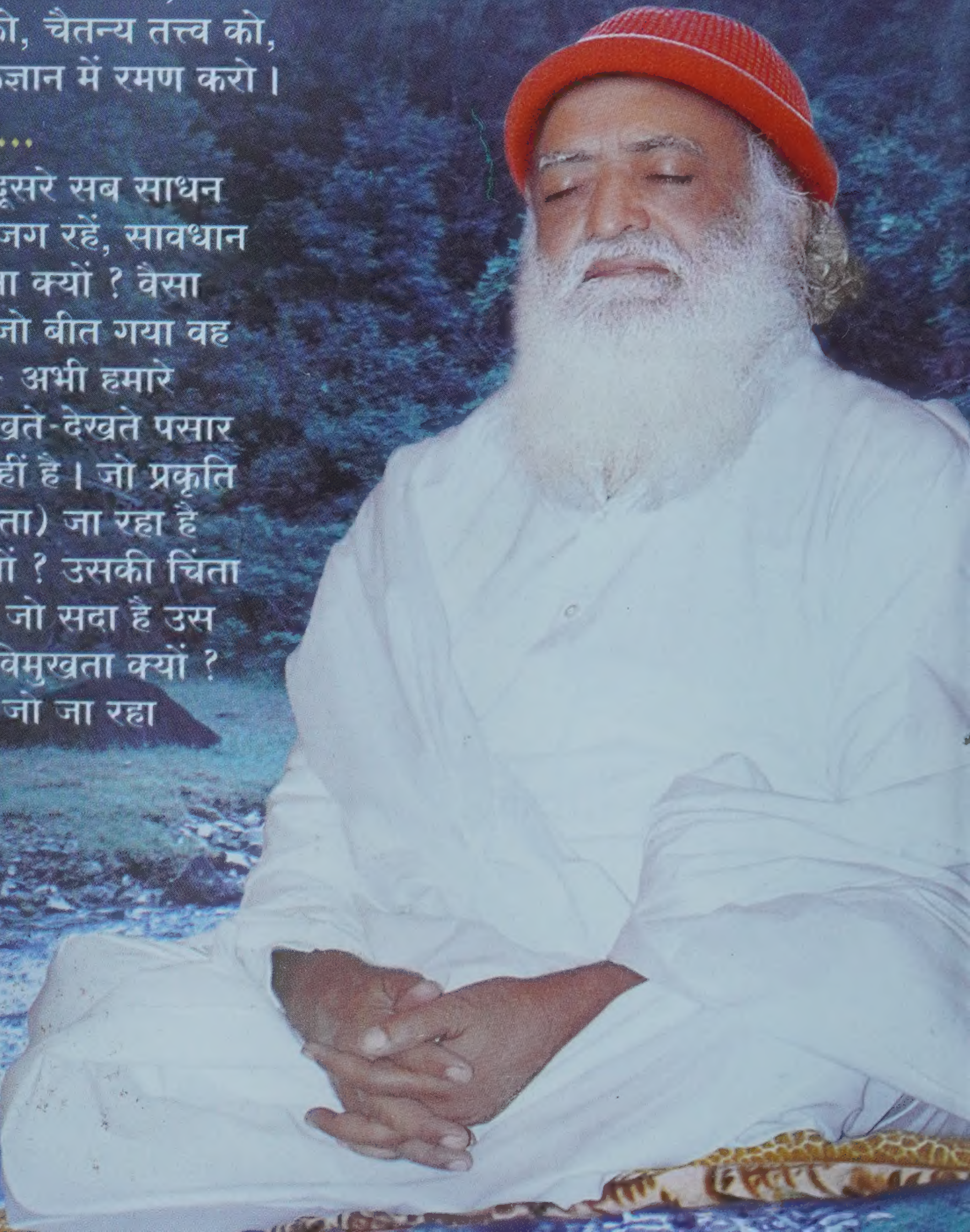
‘ जैसे मेरे सद्‌गुरु हर परिस्थिति में सम हैं, शांत हैं, सजग हैं, सस्नेह हैं, सविचार हैं, ससत् हैं, सचित् हैं, सानंद हैं अर्थात् सत् के साथ, चेतन के साथ, आनंद के साथ जैसे मेरे गुरुदेव रमण करते हैं वैसे मैं भी करूँ। ’

इस प्रकार की सूझबूझ और सतत सावधानी जो रखता है वह यदि साधारण-से-साधारण व्यक्ति हो तो भी अपने उच्च आत्मा को पा लेता है, समझ लेता है।

‘मैं बीमार हूँ, मैं बीमार हूँ...’ ऐसा चिंतन नहीं करो। ‘बीमार शरीर है, मैं इसको जानता हूँ।’ ‘मैं दुःखी हूँ...’ नहीं, ‘दुःखी मन है, मैं इसको जानता हूँ। मैं अमर आत्मा हूँ, मैं गुरु का हूँ - गुरु मेरे हैं, मैं प्रभु का हूँ - प्रभु मेरे हैं !’ ऐसा चिंतन करो तो दुःख, बीमारी, परेशानी चले जायेंगे। भले देर-सवेर जायें पर जायेंगे जरूर। और अगर फिर आयेंगे तो इनका महत्त्व नहीं रहेगा। बाह्य जगत में तुम जिसको महत्त्व देते हो, जिससे प्रभावित होते हो वही तुम्हारे को नन्हा बना देता है और ईश्वर एवं सद्‌गुरु को महत्त्व देते हो, उनसे प्रभावित रहते हो तो वे तुम्हें अपने स्वभाव में मिला लेंगे और तुच्छ को महत्त्व देते हो तो वे तुम्हें तुच्छ बना देंगे। कभी भी रोग को, दुःख को, बीमारी को, भूतकाल को महत्त्व न दो। गुरु-तत्त्व को, चैतन्य तत्त्व को, गुरुज्ञान को महत्त्व देकर नित्य उस गुरुज्ञान में रमण करो।

सावधानी ही साधन है...

सजगता, सावधानी ही साधन है। दूसरे सब साधन छोटे हैं। गुरु से प्राप्त उपदेश में हम सजग रहें, सावधान रहें और कभी यह पकड़ न रखें कि ‘ऐसा क्यों ? वैसा क्यों ?...’ इसीका नाम तो दुनिया है। जो बीत गया वह भूतकाल है, जो आयेगा वह भविष्य है - अभी हमारे पास नहीं है, अभी जो वर्तमान है वह देखते-देखते पसार हो रहा है, उसमें रुकने की ताकत ही नहीं है। जो प्रकृति (माया) के दायरे में है और सतत (बीतता) जा रहा है उसका भय क्यों ? उसका आकर्षण क्यों ? उसकी चिंता क्यों ? और जाने को जो निहार रहा है, जो सदा है उस गुरु-तत्त्व, चैतन्य तत्त्व, आत्मतत्त्व से विमुखता क्यों ? जो सदा है उसके सम्मुख हो जायें और जो जा रहा है उसका ठीक उपयोग कर लें बस, तुम्हारे दोनों हाथों में लड्डू !



ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३१ अंक : २ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३४४
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०२१
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९९१२१०७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

इस अंक में...

तीन सच्चे हितैषी

- पूज्य बापूजी

सच्चे हितैषी तीन ही होते हैं :

(१) संयमी, सदाचारी, शांत मन हमारा हितैषी है । जो मन में आया वह करने लगे या मन के गुलाम बने तो वह मन हमारा शत्रु है । जो मन संयमित है, शांत है वही हमारा हितैषी है । असंयमित, अशांत मन तबाही कर देता है ।

(२) इष्टदेव हमारे हितैषी हैं । ब्रह्मवेत्ता गुरु मिलने के पहले जिनको भी इष्ट माना है वे हमारे हितैषी होते हैं । वे इष्ट ही प्रेरणा करते हैं : 'जाओ लीलाशाहजी के पास या फलाने ब्रह्मवेत्ता गुरु के पास, यह करो, वह करो... ।'



(३) ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु हमारे हितैषी हैं । जब सद्गुरु मिल जाते हैं तो इष्ट का काम पूरा हो जाता है । अकेले इष्ट शक्तिशाली तो हैं परंतु वे एक शक्ति हैं, जब इष्ट गुरु के पास भेजते हैं तो ११ गुनी शक्ति हो जाती है ।

इष्ट को हम मानते थे, उनकी पूजा करते थे । इष्ट ने गुरु के पास भेजा और गुरु ने इष्ट को चुरवा लिया तो इष्ट नाराज नहीं हुए कि 'ऐसा कैसा गुरु ? मैंने तो ऐसा साधक भेजा और मेरी ही पूजा छुड़वा दी !' नहीं-नहीं, **इष्ट और सद्गुरु पूजा के प्यासे नहीं होते, पूजा के भूखे नहीं होते । पूजा के निमित्त हमारा मंगल हो इसलिए स्वीकार कर लेते हैं, बाकी उनको क्या परवाह है !** इष्ट और सद्गुरु हमारे दुश्मन नहीं होते हैं परंतु कभी-कभार देखोगे कि अच्छे काम करके इष्ट या सद्गुरु को प्रणाम करने गये हो तो वे प्रसन्न मिलेंगे और गड़बड़ की तो इष्ट या गुरु की आँखें अंगारे बरसाती हुई मिलेंगी । हम स्वयं अपने इतने हितैषी नहीं हैं; सद्गुरु सच्चे हितैषी होते हैं, जो कई जन्मों की हमारी कमजोरी, दोष, पाप, अपराध, दुष्टता व अकड़-पकड़ को जानते हुए भी हमारा त्याग नहीं करते, हमसे घृणा नहीं करते, हमारे लिए उनके मन में हित की भावना होती है । ऐसे पूर्ण हितैषी सद्गुरु हमें जो देना चाहते हैं उसकी हम १० जन्मों में भी कल्पना नहीं कर सकते । उस परमात्म-धन के वे धनी होते हैं और वह हँसते-खेलते हमें देना चाहते हैं । आवश्यक वस्तु बिना माँगे ही सद्गुरु दे देते हैं और अनावश्यक माँगें, जैसे - प्रसिद्ध होने की माँग, कपट करके लोगों से पैसा बटोरने की माँग... ये सब जो गलत बातें हैं, जिनको यदि आप चाहते हैं तो गुरुजी उन चाहों को लताड़ते हुए भी आपको शुद्ध बनाने में बहादुर होते हैं । अनावश्यक वस्तुएँ, जिनको हम चाहते हैं, वे हमसे छीनते हैं और आवश्यक वस्तुएँ, जिनको हम नहीं भी चाहते हैं उन्हें वे हँसते-खेलते, पुचकारते हुए देते हैं ।

शोक, विलाप, मनमुखता, छल-कपट करने की तुम्हारी जो पुरानी आदतें हैं उनको सच्चे हितैषी गुरु कैसे निकालते हैं वह तो वे ही जानते हैं । उस समय गुरु शत्रु जैसे भी लगें तब भी भूलकर भी उनका दामन नहीं छोड़ना चाहिए । परम हितैषी सद्गुरु तुम्हारे अहं की परवाह न करके तुम्हारी महानता पर दृष्टि रखते हैं । उनके लिए 'परम हितैषी' शब्द भी छोटा है ।

माँ-बाप बच्चे का जितना हित जानते और

कर सकते हैं उतना बच्चा नहीं जानता है, नहीं कर सकता है। माँ-बाप की तो सीमा है परंतु सद्गुरु व इष्ट की तो सीमा होती ही नहीं है। वे असीम तत्त्व के धनी होते हैं।

आपका गुरु जाने, आप जानो, मैं तो मेरे गुरुदेव को बोल रहा हूँ कि 'आप ब्रह्मा हैं, आप विष्णु हैं, आप चन्द्र हैं, आप सूर्य हैं, आप नक्षत्र हैं, आप ग्रहों से भी परे हैं, आप पूर्ण-के-पूर्ण हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश का अधिष्ठान जो आत्मा है वही आप हैं।'

मैंने अपने गुरु को जब 'गुरु ब्रह्मा' बोला तो मेरी आँखें पवित्र हो गयीं, भर आयीं। दुनिया में ऐसा कोई हितैषी नहीं जितना गुरुदेव हैं।

'हे लीलाशाह भगवान ! भगवान भी आपके आगे मत्था टेकते हैं, आप ब्रह्मस्वरूप हैं।' किसीने कहा : ''मेरे गुरु तो भगवान हैं।''

मैंने कहा : ''तू गाली दे रहा है।''

अरे, भगवान भी जिनका चेला बन के अपने सौभाग्य की सराहना करते हैं उनको बोलते हैं 'गुरु'।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मङ्गलम्।

जब तक ब्रह्मज्ञानी गुरु नहीं मिले तब तक इष्ट का अवलम्बन, सहारा कुछ साथ देता है परंतु जैसे जब सूरज के प्रकाश में आ गये तो दीये का प्रकाश सूरज के प्रकाश में समा जाता है ऐसे ही इष्ट का कृपा-प्रसाद गुरुकृपा आने के बाद सब गुरुकृपा में बदल जाता है।

हमारे इष्ट को गुरुदेव ने चुरवा लिया, गोदाम में रखवा दिया। इष्ट को कोई फिक्र नहीं। उसके बाद इष्ट की पूजा हमने कभी की नहीं और अनिष्ट कभी हुआ ही नहीं, इष्ट-ही-इष्ट है। गुरु ने हमको ही करोड़ों लोगों का इष्ट बना दिया।

हे गुरुदेव ! हम तो इस बात में बबलू थे। हम जो नहीं चाहते थे (जिसका हमें पता नहीं था) वह दे दिया और हम जो चाहते थे (शिवजी का साकार दर्शन व प्रसन्नता) वह हटवा दिया। कितना हित है आपकी दृष्टि में ! कितने हितैषी हैं आप ! ❐

काव्य गुंजन

साधुन की निंदा बुरी...

(संत चरनदासजी जयंती : ९ सितम्बर)

साधुन[१] की निंदा बुरी, मत कोइ कीजो भूल।
दुनिया में दुःख पाय है, रहै नरक में झूल ॥

साधु का निंदक तन-मन दुःखी।
साधु का निंदक होय न सुखी ॥
निंदक साधु[२] दरिद्री होय।
निंदक डारे सर्वस खोय[३] ॥
साधु का निंदक नरक मँझार[४]।
निश्चय खावे यम की मार ॥
साधु का निंदक पूरा पापी।
साधु का निंदक डूबे आपी[५] ॥
मूरख होय सो निंदा करे।
साधु-संत कूँ अवगुण धरे[६] ॥
साधु का निंदक श्वान समान।
साधु का निंदक शूकर जान ॥
साधु राम की कहिये देह।
निंदक के मुख माहीं खेह[७] ॥
चरणदास निंदा तजि दीजे।
भक्तों की अस्तुति[८] ही कीजे ॥

साधुन की अस्तुति किये, हरि की अस्तुति होय।
भक्तों की निंदा किये, प्रभु की निंदा सोय ॥

– संत चरनदासजी

१. साधु-संतों २. संत-निंदक ३. निंदक अपना सर्वस्व खो डालता है ४. नरक में जाता है ५. आप ही ६. साधु-संतों में दोष-दर्शन करता है ७. धूल ८. स्तुति

मन को युक्ति से सँभाल लो तो बेड़ा पार हो जायेगा

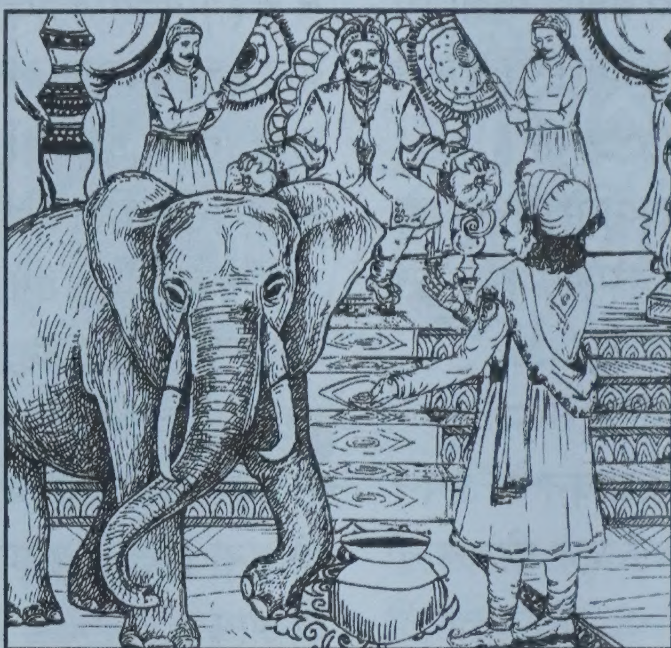
- पूज्य बापूजी

एक बार बीरबल दरबार में देर से आये तो अकबर ने पूछा : ''देर हो गयी, क्या बात है ?''

बीरबल ने कहा : ''हजूर ! बच्चा रो रहा था, उसको जरा शांत कराया।''

''...तो बच्चे को शांत कराने में दोपहर कर दी तुमने ! कैसे बीरबल ?''

''हजूर ! बच्चे तो बच्चे होते हैं। राजहठ, स्त्रीहठ, योगहठ और बालहठ... जैसे राजा का हठ होता है वैसे ही बच्चों का होता है जहाँपनाह !''



अकबर : ''बच्चों को रिझाना क्या बड़ी बात है !''

बीरबल : ''हजूर ! बड़ी कठिन बात होती है।''

''अरे, बच्चे को तो यूँ पटा लो।''

''नहीं पटता महाराज ! बच्चा हठ ले ले तो फिर देखो। आप तो मेरे माई-बाप हैं, मैं बच्चा बन जाता हूँ।''

''हाँ चलो, तुमको हम राजी कर दें।''

बीरबल रोया : ''पिताजी !... पिताजी !... ऐंऽऽ ऐंऽऽ ऐंऽऽ...''

अकबर : ''अरे, क्या चाहिए ?''

''ऊँऽऽ... ऊँऽऽ...''

''अरे, क्या चाहिए ?''

''मेरे को हाथी चाहिए।''

अकबर ने महावत को बोला : ''हाथी ला के खड़ा कर दो।''

बीरबल ने फिर रोना चालू कर दिया : ''ऐंऽऽ ऐंऽऽ ऐंऽऽ...।''

''क्या है ?''

''मेरे को देगचा★ ला दो।''

''अरे, चलो एक देगचा मँगा दो।''

देगचा लाया गया।

अकबर बोला : ''देगचा ला दिया... बस ?''

''ऊँऽऽ ऊँऽऽ...''

''अब क्या है ?''

''हाथी देगचे में डाल दो।''

अकबर बोलता है : ''यह कैसे होगा !''

बोले : ''डाल दो...।''

''अरे, नहीं आयेगा।''

''नहीं, आँऽऽ... आँऽऽ...''

बच्चे का हठ... और क्या है ! अकबर समझाने में लगा।

बीरबल : ''नहीं ! देगचे में हाथी डाल दो।''

अकबर बोला : ''भाई ! मैं तो तुमको नहीं मना सकूँगा। अब मैं बेटा बनता हूँ, तुम बाप बनो।''

बीरबल : ''ठीक है।''

अकबर रोया। बीरबल बोलता है : ''बोलो बेटे अकबर ! क्या चाहिए ?''

अकबर : ''हाथी चाहिए।''

बीरबल ने नौकर को कहा : ''चार आने के खिलौनेवाले एक नहीं, दो हाथी ले आ।''

नौकर ने लाकर रख दिये।

''ले बेटे ! हाथी।''

''ऐंऽऽ ऐंऽऽ ऐंऽऽ... देगचा चाहिए।''

''लो।''

★ खाना पकाने का एक छोटा बर्तन

बोले : ''इसमें हाथी डाल दो।''

बीरबल : ''एक डालूँ कि दोनों के दोनों रख दूँ ?''

बीरबल ने युक्ति से बच्चा बने अकबर को चुप करा दिया। ऐसे ही मन भी बच्चा है। मन को देखो कि उसकी एक वृत्ति ऐसी उठी तो फिर वह क्या कर सकता है। उसको ऐसे ही खिलौने दो जिन्हें आप सेट कर सको। उसको ऐसा ही हाथी दो जो देगचे में रह सके। उसकी ऐसी ही पूर्ति करो जिससे वह तुम्हारी लगाम में, नियंत्रण में रह सके। तुम अकबर जैसा करते हो लेकिन बीरबल जैसा करना सीखो। मन बच्चा है, उसके कहने में चलोगे तो गड़बड़ कर देगा। उसके कहने में नहीं, उसको पटाने में लगो। उसके कहने में लगोगे तो वह भी अशांत रहेगा। फिर बाप भी अशांत, बेटा भी अशांत। उसको घुमाने में लगोगे तो बेटा भी खुश हो जायेगा, बाप भी खुश हो जायेगा।

मन की कुछ ऐसी-ऐसी आकांक्षाएँ, माँगें होती हैं जिनको पूरी करते-करते जीवन पूरा हो जाता है। और उनसे सुख मिला तो आदत बन जाती है और दुःख मिला तो उसका विरोध बन जाता है। लेकिन उस समय मन को और कोई बहलावे की चीज दे दो, और कोई चिंतन की चीज दे दो। हलका चिंतन करता है तो बढ़िया चिंतन दे दो, हलका बहलाव करता है तो बढ़िया बहलाव दो, उपन्यास पढ़ता है तो सत्शास्त्र दे दो, इधर-उधर की बात करता है तो माला पकड़ा दो, किसीका वस्त्र-अलंकार देखकर आकर्षित होता है तो शरीर की नश्वरता का खयाल करो, किसीके द्वारा किये अपने अपमान को याद करके जलता है तो जगत के स्वप्नत्व को याद करो। मन को ऐसे ही खिलौने दो जिससे वह आपको परेशान न करे। लोग जो मन में आया उसमें लग जाते हैं। मन में आया कि यह करूँ तो कर दिया, मन में आया फैक्ट्री बनाने का तो खड़ी कर दी, मन का करते-करते फिर फँस जाओगे, सँभालने की जवाबदारी बढ़ जायेगी और अंत में देखो तो कुछ नहीं, जिंदगी बिनजरूरी आवश्यकताओं में ही पूरी हो गयी !

इसलिए संत कबीरजी ने कहा :

साँईं इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

अपनी आवश्यकता कम करो और बाकी का समय जप में, आत्मविचार में, आत्मध्यान में, कभी-कभी एकांत में, कभी सत्कर्म में, कभी सेवा में लगाओ। अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताएँ कम करो तो आप स्वतंत्र हो जायेंगे।

अपने व्यक्तिगत सुखभोग की इच्छा कम रखो तो आपके मन की चाल कम हो जायेगी। परहित में चित्त को, समय को लगाओ तो वृत्ति व्यापक हो जायेगी। परमात्मा के ध्यान में लगाओ, वृत्ति शुद्ध हो जायेगी। परमात्मा के तत्त्व में लगाओ तो वृत्ति के बंधन से आप निवृत्त हो जायेंगे।

भाई ! सत्संग में तो हम आप लोगों को किसी प्रकार की कमी नहीं रखते, आप चलने में कमी रखें तो आपकी मर्जी की बात है।

मन बिनजरूरी माँगें करे और आप वे पूरी करेंगे तो आपको वह पूरा कर देगा (विनष्ट कर देगा)। जो जरूरी माँग है वह अपने-आप पूरी होती है इसलिए गलत माँगें, गलत लालसाएँ करें नहीं और मन करता है तो वे पूरी न करें और करनी हों तो युक्ति से कर लें। जैसे वह नकली हाथी देगचे में डाल दिया। ऐसे ही मन को कोई इच्छा-वासना हुई तो उस समय उसके अनुरूप हितकारी व्यवहार करें। समझो बीड़ी पीने की इच्छा है तो सौंफ खा ली, चलचित्र देखने की इच्छा है तो कीर्तन में चले गये, किसीको गुस्से से गाली देने की इच्छा है तो उस समय जोर से 'राम-राम-राम' चिल्लाने लग जायें। ऐसा करके युक्ति से मन को सँभाल लो तो बेड़ा पार हो जायेगा। ❐

जब रघुराई बने 'सेन नाई'

- पूज्य बापूजी

'उनका योगक्षेम सर्वेश्वर स्वयं वहन करते हैं' अंक ३४२ से आगे

'भक्तमाल' में एक कथा आती है :

बघेलखंड के बांधवगढ़ में राजा वीरसिंह का राज्य था । वीरसिंह बड़ा भाग्यशाली रहा होगा क्योंकि भगवन्नाम का जप करनेवाले, परम संतोषी एवं उदार सेन नाई उसकी सेवा करते थे । सेन नाई भगवद्भक्त थे । उनके मन में मंत्रजप निरंतर चलता ही रहता था । संत-मंडली ने सेन नाई की प्रशंसा सुनी तो एक दिन उनके घर की ओर चल पड़ी । सेन नाई राजा साहब के यहाँ हजामत बनाने को जा रहे थे ।



मार्ग में दैवयोग से मंडली ने सेन नाई से ही पूछा : ''भैया ! सेन नाई को जानते हो ?''

सेन नाई : ''क्या काम था ?''

संत : ''वह भक्त है । हम भक्त के घर जायेंगे । कुछ खायेंगे-पियेंगे और हरिगुण गायेंगे । क्या तुमने सेन नाई का नाम नहीं सुना है ?''

सेन नाई : ''दास आपके साथ ही चलता है ।''

संतों को छोड़कर वे राजा के पास कैसे जाते ? सेन नाई संत-मंडली को घर ले आये । घर में उनके भोजन की व्यवस्था की । सीधा-सामान आदि ले आये । संतों ने स्नानादि करके भगवान का पूजन किया एवं कीर्तन करने लगे । सेन नाई भी उसमें सम्मिलित हो गये ।

तन की सुधि न जिनको, जन की कहाँ से प्यारे...

सेन नाई हरि-कीर्तन में तल्लीन हो गये । हरि ने देखा कि 'मेरा भक्त तो यहाँ कीर्तन में बैठ गया है ।' हरि ने करुणावश सेन नाई का रूप लिया और पहुँच गये राजा वीरसिंह के पास ।

सेन नाई बने हरि ने राजा की मालिश की, हजामत की । राजा वीरसिंह को उनके कर-स्पर्श से जैसा सुख मिला वैसा पहले कभी नहीं मिला था । राजा बोल पड़ा : ''आज तो तेरे हाथ में कुछ जादू लगता है !''

''अन्नदाता ! बस ऐसी ही लीला है ।'' कहकर हरि तो चल दिये ।

इधर संत-मंडली भी चली गयी तब सेन नाई को याद आया कि 'राजा की सेवा में जाना है ।' सोचने लगे : 'वीरसिंह स्नान किये बिना कैसे रहे होंगे ? आज तो राजा नाराज हो जायेंगे । कोई दंड मिलेगा या तो सिपाही जेल में ले जायेंगे । चलो, राजा के पास जाकर क्षमा माँग लूँ ।'

हजामत के सामान की पेटी लेकर दौड़ते-दौड़ते सेन नाई राजमहल में आये ।

द्वारपाल ने कहा : ''अरे, सेनजी ! क्या बात है ? फिर से आ गये ? कंघी भूल गये कि आईना ?''

सेन नाई : ''मजाक छोड़ो, देर हो गयी है । क्यों दिल्लगी करते हो ?''

ऐसा कहकर सेन नाई वीरसिंह के पास पहुँच गये । देखा तो राजा बड़ी मस्ती में हैं ।

वीरसिंह : ''सेनजी ! क्या बात है ? वापस क्यों आये हो ? अभी थोड़ी देर पहले तो गये थे, कुछ भूल गये हो क्या ?''

''महाराज ! आप भी मजाक कर रहे हैं क्या ?''

''मजाक ? सेन ! तू पागल तो नहीं हुआ है ? देख यह दाढ़ी तूने बनायी, तूने ही तो नहलाया, कपड़े पहनाये । अभी तो दोपहर हो गयी है, तू फिर से आया है, क्या हुआ ?''

सेन नाई टकटकी लगाकर देखने लगे कि 'राजा की दाढ़ी बनी हुई है । स्नान करके बैठे हैं ।' फिर बोले : ''राजा साहब ! क्या मैं आपके पास आया था ?''

राजा : ''हाँ, तू ही तो था लेकिन तेरे हाथ आज बड़े कोमल लग रहे थे । आज बड़ा आनंद आ रहा है । दिल में खुशी और प्रेम उभर रहा है । तुम सचमुच भगवान के भक्त हो । भगवान के भक्तों का स्पर्श कितना प्रभावशाली व सुखदायी होता है इसका पता तो आज ही चला ।''

''तेरे हाथ आज बड़े कोमल लग रहे थे । आज बड़ा आनंद आ रहा है । दिल में खुशी और प्रेम उभर रहा है । तुम सचमुच भगवान के भक्त हो ।''

सेन नाई समझ गये कि 'मेरी प्रसन्नता और संतोष के लिए भगवान को मेरी अनुपस्थिति में नाई का रूप धारण करना पड़ा ।' वे अपने-आपको धिक्कारने लगे कि 'एक तुच्छ-सी सेवापूर्ति के लिए मेरे कारण विश्वनियंता को, मेरे प्रेमास्पद को खुद आना पड़ा ! मेरे प्रभु को इतना कष्ट उठाना पड़ा ! मैं कितना अभागा हूँ !'

वे बोले : ''राजा साहब ! मैं नहीं आया था । मैं तो मार्ग में मिली संत-मंडली को लेकर घर वापस लौट गया था । मैं तो अपना काम भूल गया था और साधुओं की सेवा में लग गया था । मैं तो भूल गया किंतु मेरी लाज रखने के लिए परमात्मा स्वयं नाई का रूप लेकर आये थे ।''

'प्रभु !... प्रभु !...' करके सेन नाई तो भावसमाधि में खो गये । राजा वीरसिंह का भी हृदय पिघल गया । अब सेन नाई तुच्छ सेन नाई नहीं थे और वीरसिंह अहंकारी वीरसिंह नहीं था । दोनों के हृदयों में प्रभुप्रेम की, उस दाता की दया-माधुर्य की मंगलमयी सुख-शांतिदात्री... करुणा-वरुणालय की रसमयी, सुखमयी, प्रेममयी, माधुर्यमयी धारा हृदय में उभारी धरापति ने । दोनों एक-दूसरे के गले लगे और वीरसिंह ने सेन नाई के पैर छुए और बोला : ''राज-परिवार जन्म-जन्म तक आपका और आपके वंशजों का आभारी रहेगा । भगवान ने आपकी ही प्रसन्नता के लिए मंगलमय दर्शन देकर हमारे असंख्य पाप-तापों का अंत किया है । सेन ! अब से आप यह कष्ट नहीं सहना । अब से आप भजन करना, संतों की सेवा करना और मेरा यह तुच्छ धन मेरे प्रभु के काम में लग जाय ऐसी मुझ पर मेहरबानी किया करना । कुछ सेवा का अवसर हो तो मुझे बता दिया करना ।''

भक्त सेन नाई उसके बाद वीरसिंह की सेवा में नहीं गये । थे तो नाई लेकिन उस परमात्मा के प्रेम में अमर हो गये और वीरसिंह भी ऐसे भक्त का संग पाकर धनभागी हो गया ।

कैसा है वह करुणा-वरुणालय ! अपने भक्त की लाज रखने के लिए उसको नाई का रूप लेने में भी कोई संकोच नहीं होता ! अद्‌भुत है वह सर्वात्मा और धन्य है उसके प्रेम में सराबोर रहकर संत-सेवा करनेवाले सेन नाई ! (क्रमशः) ❐

अमृतबिंदु **- पूज्य बापूजी**

आप ईश्वर को प्यार करते हैं ईमानदारी से तो उसकी कृति में आप धन्यवाद के सिवा और कुछ नहीं सोच सकते । सच्चा प्रेमी फरियाद नहीं करता ।

इस प्रकार से रक्षाबंधन मनाना है कल्याणकारी

- पूज्य बापूजी

(रक्षाबंधन : २२ अगस्त)

श्रावणी पूनम को मनाया जानेवाला रक्षाबंधन महोत्सव भाई-बहन के बीच शुभ संकल्पों के आदान-प्रदान का पर्व है । यह पर्व अभिमन्यु व कुंताजी के बीच, लक्ष्मीजी व राजा बलि के बीच और रानी कर्मावती व हुमायूँ के बीच एक कच्चे सूत के धागे से हुए शुद्ध संकल्पों के आदान-प्रदान की स्मृति दिलाता है ।



ऐसा संकल्प हर भाई-बहन करे

बहन भाई के लिए यह संकल्प करे कि 'मेरा और मेरे भाई का शरीर से तो बहन-भाई का संबंध है, भावों का संबंध है, इस जन्म में एक ही उदर से जन्मे हैं परंतु पूर्व जन्म में न जाने भाई कौन-से उदर से पैदा हुआ था और मैं किसके उदर से पैदा हुई थी ! **हे भगवान ! मेरे भाई को तू त्रिलोचन बना दे ताकि वह हजारों-हजारों माता-पिताओं के शरीर से न गुजरे अपितु अपना जो सच्चा पिता, माता, बंधु, भाई तथा सर्वस्व है उस परमात्मा की प्राप्ति भाई को हो जाय । मेरा भाई संसार के राग-द्वेष के प्रसंगों में, ठंडी-गर्मी, मान-अपमान के प्रसंगों में द्रष्टा, साक्षी होकर, जीवन्मुक्त हो के गुजरे ।'**

भाई भी बहन को कोई वस्तु दे तो उसके लिए ऐसी भावना अवश्य करे कि '**बहन का भी तीसरा नेत्र - ज्ञाननेत्र खुल जाय, उसे आत्मज्ञान हो जाय । मेरी बहन ऐसी बने कि रानी मदालसा, गार्गी, रानी चूडाला (जैसी ब्रह्मवेत्ता सन्नारियों की ऊँचाइयों) की खबरें दे ।'** इसमें भाई का भी कल्याण है, बहन का भी कल्याण है । हम तुच्छ आकांक्षाएँ, तुच्छ इच्छाएँ न करें । हमारी आकांक्षाएँ और इच्छाएँ शुद्ध हृदय से उठें ।' हृदय शुद्ध करने के लिए परमात्मा का ध्यान, उसके नाम का जप, प्राणायाम, सत्संग है जो हमें शुद्धि देता है और **शुद्ध हृदयवाले व्यक्ति का संकल्प कल्पवृक्ष की नाईं फलता है ।** इस प्रकार का अगर मानसिक संकल्प करते हैं तो बहन ने भाई को बहुत कुछ दिया और भाई ने बहन को बहुत कुछ दिया । भाई ने बहन को साड़ी व अन्य चीजें दे दीं, उसकी सँभाल ली, उसके आँसू पोंछे या भाई को कोई सांसारिक समस्या है तो बहन ने मदद कर दी - यह तो हमारा सामाजिक व व्यावहारिक कर्तव्य हो जाता है लेकिन इसके साथ हमारा परम कर्तव्य यह है कि हम यह सद्भावभरी प्रार्थना करें : 'हे भगवान ! जन्म-जन्म से हजारों माताओं के उदर में भाई आ रहा है या बहन आ रही है तो उसे अब बार-बार किसीके गर्भ में उलटा न लटकना पड़े, बार-बार जन्मना-मरना न पड़े, ऐसी कृपा करके तू इसके ज्ञान के नेत्र खोल दे ।'

सद्गुरुओं व साधकों का रक्षाबंधन

ऐसी शुभ भावना हम सद्गुरुओं के प्रति भी करते हैं कि '**गुरुदेव ! आपका स्वास्थ्य बढ़िया रहे, आपका आरोग्य-धन बढ़ता रहे, आपका परोपकार का महाभगीरथ कार्य बढ़ता रहे और आप हमारे जैसे लाखों-करोड़ों को ईश्वर की तरफ की यात्रा कराते रहें, ईश्वरीय आनंद में डुबाते रहें ।'** संत हमारे प्रति जो शुभकामना करते हैं वह तो संत जानते ही हैं । संत तो हमारे लिए यही बढ़िया शुभकामना करते हैं कि हम त्रिलोचन हो जायें, हम द्रष्टा हो जायें ।

तो मैं हाथ आगे करके बैठा हूँ । आप १-२ मिनट आँखें बंद करके मानसिक राखी बाँध दो और मानसिक शुभ संकल्प कर दो । मानसिक शुभ संकल्प और मानसिक राखी में बड़ी शक्ति होती है । स्थूल रूप से राखी नहीं भेजना । ❐

॥ जो सच्चे प्रेमरस (भगवत्प्रेम-रस) को समझे बिना संसार में प्रेम खोजते हैं वे दुःखी हो जाते हैं। ॥

श्रीकृष्ण के जीवन से सीखें कृष्ण-तत्त्व उभारने की कला

जन्माष्टमी : ३० अगस्त

- पूज्य बापूजी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की बधाइयाँ !

जन्माष्टमी महापर्व है। परात्पर ब्रह्म, निर्गुण-निराकार, पूर्णकाम, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, परमेश्वर, देवेश्वर, विश्वेश्वर... क्या-क्या कहें... वही निराकार ब्रह्म नन्हा-मुन्ना होकर मानवीय लीला करते हुए मानवीय आनंद, माधुर्य, चेतना को ब्रह्मरस से सम्पन्न करने के लिए अवतरित हुआ जिस दिन, वह है जन्माष्टमी का दिन।



श्रीकृष्ण मध्यरात्रि को और श्रीराम मध्याह्न को अवतरित हुए । तप्त मध्याह्न में धर्म की मर्यादा का प्रसाद बाँटकर चित्त में शीतलता, शांति और 'स्व' का साम्राज्य देने के लिए जो अवतार हुआ वह रामावतार है और अंधाधुंध कालिमा को अपने प्रेम-प्रकाश से प्रकाशित करने के लिए जो अवतार हुआ वह श्रीकृष्णावतार है। श्रीकृष्णावतार की बधाइयाँ हों !

ये अवतार नहीं होते तो...

सर्वेश्वर, परमेश्वर आप्तकाम (पूर्णकाम, इच्छारहित) होते हुए भी हजारों-लाखों के दिलों की पुकार से प्रसन्न होकर उस-उस समय के अनुरूप नर-तन धारण कर लेता है तो उसे 'अवतार' कहते हैं।

अवतरति इति अवतारः ।

अगर धरती पर श्रीकृष्ण-अवतरण नहीं होता तो भारतवासी भी विदेशियों की तरह हो जाते। जैसे विदेशी बेचारे इंजेक्शन व कैप्सूल लेने के बावजूद रात को ठीक से नींद नहीं ले पाते हैं और इतनी सुविधा व व्यवस्था होने पर भी उनके जीवन में कोई सुमधुर गीत नहीं, संगीत नहीं, माधुर्य नहीं । हाँ, वहाँ रॉक-पॉप और डिस्को-विस्को है, वाइन है, सम्भोग है और 'सम्भोग से समाधि' बकनेवाले के प्रेरक फ्रायड का मनोविज्ञान है लेकिन यहाँ 'परमात्मा की प्रीति से समाधि' यह भारतीय अवतारों के लीलामृत का प्रसाद है।

इस प्रेमावतार को आप पूजो या उसकी जय बोलो यह मैं नहीं कहता। भले उसको गाली दे दो, भले उससे उठ-बैठ कराओ या ओखली से बाँधो फिर भी वह यशोदा का मंगलकारी है तो तुम्हारा अहित कैसे करेगा ! वह प्यारा कन्हैया कैसा है यह तो वही जाने ! थोड़ा-थोड़ा भक्त और संत जानें !

श्रीकृष्ण की दिनचर्या अपनाकर तो देखो !

श्रीकृष्ण सुबह उठकर जो करते थे वह आप करो। आप उनकी नकल तो करो ! अरे, कृष्ण की नकल से भी तुम्हारा कृष्ण-तत्त्व उभरेगा। **श्रीकृष्ण नींद में से उठते तो शांत होकर अपने स्वभाव में बैठ जाते, थोड़ा विश्रांति पाते और सोचते कि 'यह दिखनेवाला शरीर और संसार बदलता है परंतु देखनेवाला मैं अमर आत्मा हूँ। इस मोहमाया और क्रियाकलाप का मुझ चैतन्य पर कोई असर नहीं होता।'** नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त अपने आत्मस्वभाव का श्रीकृष्ण अमृतपान करते थे।

फिर सोचते थे कि 'आज के दिन मुझे क्या-क्या शुभ कर्म करने हैं ? फलाने ब्राह्मणों के समाज को इतनी गौएँ भेजनी हैं और गौओं के सींगों पर यह-यह लगा दिया जाय तथा साथ में यह-यह दक्षिणा हो... ।'

अब मैं आपको बोलूँ कि गौएँ भेजने का सोचो तो अनुचित होगा, फिर भी कुछ तो सोचो । सुबह-सुबह आप उठो, थोड़े शांत रहो । बिस्तर, खटिया या पलंग के पास २ बर्तन पड़े रहें । एक बर्तन में चावल, चने, जौ, तिल या और कोई अनाज हो अथवा कोई तुम्हारी प्रिय वस्तु हो; दूसरा बर्तन खाली हो, उसमें ४ दाने डाल दो - **श्रीकृष्णार्पणमस्तु...** समाजरूपी कृष्ण की सेवा में लगें । फिर वे ४ दाने चाहे पक्षियों या कीड़ियों को डाल दो, चाहे कहीं और उनका सदुपयोग करो । सत्यस्वरूप ईश्वर की प्रीति के लिए आप सुबह देना शुरू करो । ४ दाने तो आप दे सकते हैं, आप इतने कंजूस या कंगाल नहीं हैं । आप तो मुट्ठी भरकर भी डाल दोगे, २ मुट्ठियाँ भी डाल दोगे, ४ पैसे ही डाल दो ईश्वरप्रीत्यर्थ... 'ऐ प्रेमी ! ऐ पिया (परमात्मा) ! तेरे प्यारवश तेरे को यह अर्पण करता हूँ ।' मुझे लगता है कि इससे आपका बड़ा मंगल होगा !

आप सुबह-सुबह उससे हस्तमिलाप कर लीजिये । आपकी सुबह बहुत सुहावनी हो जायेगी, आपका दिन सुहावना हो जायेगा, आपका मन, मति और गति सुहावनी हो जायेगी ।

फिर ४ मिनट आप शांत बैठ जाओ । घर में कलह है, नौकरी में समस्या है, शरीर में बीमारी है तो उसका उपाय क्या है ? १-१ मिनट तीनों प्रश्नों पर दृष्टि डालो और चौथे मिनट में उसका समाधान अंदर से जो आयेगा वह आपको दिनभर तो क्या, वर्षोंभर मदद करेगा ।

इस प्रकार का प्रयोग आप करो तो आपको बहुत लाभ होगा । फिर क्या करोगे ? हैं तो दोनों हाथ उसीके, सारा शरीर, जीवन उसीका है पर हम बेईमानी करते हैं कि 'यह मैं हूँ और यह मेरा है ।' कम-से-कम सुबह तो बेईमानी का हिस्सा आधा कर दो । 'एक हाथ तुझ प्यारे का और एक हाथ मेरा, मिला दे हाथ !' ऐसा करके दोनों हाथ आपस में मिला दो और प्रभु से कहो : 'बिन फेरे हम तेरे ! हजारों शरीर मिले और मर गये लेकिन तू नहीं मिटा... दूर नहीं हुआ मेरे से । हजारों पिता-माता, पति-पत्नियाँ, मित्र मिले, धन-दौलत मिली... ये आये और गये किंतु उसको देखनेवाला तू और मैं वही-के-वही ! मेरे प्रभु ! मेरे गुरुदेव ! बिन फेरे हम तेरे !'

आप सुबह-सुबह उससे हस्तमिलाप कर लीजिये । आपकी सुबह बहुत सुहावनी हो जायेगी, आपका दिन सुहावना हो जायेगा, आपका मन, मति और गति सुहावनी हो जायेगी ।

परमात्मा से रोज प्रीति करो

आप रोज उसीकी शरण जाओ । ऐसा नहीं कि समस्या आये तब जायें... जैसे आप समस्या आने पर ही अपने अधिकारी के पास जाते हैं तो वह समझ जाता है कि यह तो स्वार्थी है किंतु आप उससे मिलते-जुलते रहते हो और कभी कुछ समस्या आ जाती है तो वह उसको सहानुभूतिपूर्वक सुनता है और उसे दूर करने में अपनी सहायता भी देता है । ऐसे ही आप परमात्मा से रोज प्रीति करते जाइये । कभी कोई कष्ट, विघ्न-बाधा आये तो उसे प्रेम से कह दीजिये कि 'प्रभु ! अब ऐसा है ।' वह सुनेगा और भीतर से सत्प्रेरणा और सामर्थ्य भी देगा । ❐

इस अंक की 'प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) घ (२) ख (३) ग (४) घ

॥ दुःख उससे दुःखी होकर मरने की चीज नहीं है, दुःख तो पैरों तले कुचलने की चीज है। ॥

कष्ट-मुसीबतों को पैरों तले कुचलने की कला

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

कष्ट-मुसीबतें और प्रतिकूलताएँ तो सभीके जीवन में आती हैं, संत-महापुरुषों व अवतारों के जीवन में तो प्रतिकूल परिस्थितियों की खूब अधिकता देखने में आती है किंतु सामान्य व्यक्ति और उनके जीवन में इतना ही अंतर देखने में आता है कि उन परिस्थितियों में मन की विचारधारा और बुद्धि की निष्ठा दोनों की अलग-अलग होती है। इसका प्रभाव यह होता है कि जहाँ सामान्य व्यक्ति विषमता, शोक की खाई में गोते लगाता है वहीं वे महापुरुष समता और सद्ज्ञान की गहराई में सहज में ही चले जाते हैं। समान परिस्थिति में फल इतना विपरीत होने का एकमात्र कारण गुरुज्ञान है। कैसे ? आइये जानते हैं गुरुज्ञान को मात्र शाब्दिक रूप से नहीं अपितु अनुभवरूप से आत्मसात् किये हुए पूज्य बापूजी के श्रीमुख से प्रवाहित उन्हींके जीवन-प्रसंगों से :

गुरुज्ञान ही काम आया

सन् १९७४-७५ के आसपास की बात होगी। अहमदाबाद आश्रम की गौशाला में एक बछड़े को साँड़ बनाना था तो उसे गायों से अलग रखते थे। वह घूमने जाता तो हम कभी-कभी उसके सींग पकड़ के उसके साथ जरा विनोद करते थे। बात तो साधारण है पर ज्ञान बिल्कुल टनाटन है।

गर्मियों के दिनों में हम हिमालय जाते। महीने-दो महीने वहाँ जरा सामान्य दिनों से अल्प खान-पान, यह-वह सब करते। एक बार हम जब हिमालय से लौटे तो हमारा शरीर थोड़ा कृश हो गया था और वह साँड़ घूमघाम के, बारिश की मस्ती लेकर तगड़ा हो गया था। जब वह घूम रहा था तब हम भी घूमने गये। तो हमारी पुरानी दोस्ती थी, वह हमारे नजदीक आया। मैंने उसके सींग पकड़े तो वह आगे-पीछे हुआ और साँड़ तो साँड़ है, उसने दे मारा धक्का। धड़ाक-धूम... हाथ के बल ऐसे गिरे कि दायाँ हाथ तो उसके सींगों में रहा और बायें हाथ पर मेरा बल और उसका बल तो वह बायाँ हाथ उलटा हो गया, कोहनी से घूम गया।

साँड़ तो चला गया लेकिन पहले क्षण तो ऐसी पीड़ा हुई कि ओ हो... पैरों तले धरती निकल गयी, अँधेरा-सा छा गया। पहले मिनट में इतनी पीड़ा हुई, इतनी पीड़ा हुई कि जिसको वैसा लगा हो उसीको पता चले।

मेरे असंख्य भक्त थे और दर्जनों डॉक्टर मेरे शिष्य थे। मेरे लिए करोड़ों रुपये खर्चने की तैयारी रखनेवाले भक्त भी थे। परंतु उस समय उनके करोड़ों रुपये, दर्जनों डॉक्टर मेरे काम में नहीं आये। सद्गुरु का सुना हुआ ज्ञान काम में आया कि **'पीड़ा हो तो किसको पीड़ा हो रही है ध्यान से देखना !'**

यह बात आपके लिए बड़ी कीमती है। गुरु का ज्ञान काम आया कि 'यह हाथ टूट गया है, पीड़ा हो रही है कोहनी में, बाकी का शरीर ठीक है। कोहनी को, हाथ को पीड़ा हो रही है, उसको देखनेवाला मैं अलग हूँ।' अपने आत्मा का, पीड़ा-दुःख से अलग होने का विचार आते ही बुद्धि, तन और मन नियंत्रित हुए। मैंने धीरे से हाथ को पकड़ा, सँभाला और उठ खड़ा हुआ। आश्रमवासियों को बोला : ''हाड़वैद्य को बुलाना है जरा।''

बोले : ''किसके लिए ?''

''काम है।''

''कहाँ भेजना है ?''

''कहीं भेजना नहीं है, जरा हाथ में लग गया है तो पट्टा-वट्टा बँधवाना है। यह हाथ थोड़ा घूम गया था, अभी मैंने ठीक कर दिया है।''

''ऐं... बापू ऐसा नहीं हो सकता !''

''है।''

फिर गाड़ी-वाड़ी मँगायी। अहमदाबाद में दिल्ली दरवाजा क्षेत्र है, वहाँ हाड़वैद्य रहता था, उसके पास गये। जैसे ही वह दूसरे रोगियों को हाथ लगाता तो वे चिल्लाते थे - ऐसी पीड़ा होती है हड्डी टूटने की। परंतु जब वह इधर-उधर खूब घुमाकर मेरे हाथ की हड्डी बैठा रहा था तो मैं जोर से हँस पड़ा। वह घबराया कि 'ये कैसे महाराज हैं ! हाथ इतना मुड़ गया, अब सीधा कर रहे हैं तो (इतने दर्द में भी ये) हँस रहे हैं !'

मैंने कहा : ''जैसी पीड़ा दूसरों को होती है वैसी इसको हुई लेकिन अब मैं समझता हूँ कि 'इसको पीड़ा हुई, मैं पीड़ा को देखनेवाला हूँ।' इस खुशी में हँस रहा हूँ।''

वह हाड़वैद्य मुसलमान था, उसकी मेरे में श्रद्धा नहीं थी परंतु वह मेरी हँसी देखकर ऐसा भगत बन गया कि पट्टा बाँधने का एक पैसा भी नहीं लिया। उसने बोला : ''गजब के फकीर हैं ! ऐसे फकीर की सेवा का मौका तो मिल जाय।''

मैं इसलिए बता रहा हूँ कि **आपके शरीर को कभी पीड़ा हो तो आप उसे अपने मन में न घुसने दीजिये**, मन में अगर घुस भी जाय तो जोर-जोर से 'हरि ओऽम्म... हरि ओऽम्म... हरि ॐ...' ऐसा उच्चारण करके सोचें कि 'पीड़ा तो हाथ को, पैर को, पेट को, सिर को हुई है, मैं स्वस्थ हूँ।' इससे आधी पीड़ा का प्रभाव ऐसे ही टूट जायेगा, बाकी छोटे-मोटे इलाज से आप स्वस्थ हो जायेंगे। कभी यह न सोचना कि 'मैं स्वस्थ हुआ हूँ।' शरीर स्वस्थ हुआ है। 'मैं पहले भी स्वस्थ था, अब भी स्वस्थ हूँ और मरने के बाद भी 'स्व' में स्थिति होने की यात्रा करनेवाला 'स्व'स्थ रहूँगा। हरि ओऽम्म...'

आत्मज्ञान कितनी रक्षा करता है !

विकट परिस्थितियों में गुरुज्ञान ही है एकमात्र आश्रय

अपना हौसला बुलंद हो तो असम्भव कुछ भी नहीं है, सब सम्भव है।

हार कब होती है ? जब व्यक्ति भीतर से अपनी हार मानता है या भीतर से गिरता है। जीत कब होती है ? जब व्यक्ति भीतर से हौसला बुलंद रखता है और जीत मानता है।

सन् १९९८ की बात है, हम ओड़िशा पहुँचे। कटक में सत्संग हुआ। आसपास के आदिवासी इलाके में १०-१५ हजार गरीब लोगों में भंडारा, अन्न-वस्त्र वितरण आदि सेवा हुई, उनके लिए वही सत्संग था। फिर ब्रह्मपुर में सत्संग करके वहाँ से कालाहांडी के आदिवासी इलाके में हम जानेवाले थे। पर वहाँ के कुछ राजनेताओं को भ्रांति हो गयी कि बापूजी आयेंगे तो शायद हम हार जायेंगे। अतः मेरे चार्टर प्लेन को उतरने की अनुमति देने में उन्होंने लीला की, आखिरी समय में जिलाधिकारी ने ना बोल दिया। मुझे कार द्वारा १२ घंटे की मुसाफिरी करके वहाँ जाना पड़ा। फिर गरीबों को अन्न-वस्त्र बाँटने थे तो उन लोगों ने पूरी कोशिश की कि न बँटें और हमने पूरी कोशिश की कि बँट जायें तो हमारी कोशिश भगवान ने सफल कर दी।

१०-१२ घंटे आने के, १०-१२ घंटे भंडारे में, २-५ घंटे उन्होंने रोके रखा तो शरीर की भी अपनी सीमा होती है। शरीर की थकान, भूख-प्यास... फिर फालसीपेरम मलेरिया के

च्छरों ने शरीर पर भंडारा चालू कर दिया तो ालसीपेरम मलेरिया हो गया । वह मलेरिया ीतर काम करता रहा, हमें पता नहीं चला और म बाहर सत्संग-कार्यक्रम करते रहे । भीतर ून को पानी बनानेवाला वह जहरी मलेरिया हुत तेजी से फैल गया । हीमोग्लोबिन १४-१५ g/dl था तो ७ g/dl हो गया ।

बीमारी ने कोटा (राज.) में ोर पकड़ा फिर भी फरीदाबाद व ड़गाँव का सत्संग करने को हम हाँ से चल तो पड़े पर शरीर को ालसीपेरम मलेरिया ने इतना ोड़ दिया कि शरीर ने कहा कि अब भाई लाचार हैं !'

फरीदाबाद में २-३ दिन इलाज ुआ परंतु सब उलटा ही हो रहा था । ुझे सचमुच बड़ी खुशी होती थी कि **शरीर की ऐसी स्थिति होने पर भी चित्त में दुःख नहीं । वाह मेरे गुरुदेव ! आपके ान की महिमा !!'**

''उस समय उनके करोड़ों रुपये, दर्जनों डॉक्टर मेरे काम में नहीं आये । सद्गुरु का सुना हुआ ज्ञान काम में आया कि... ''

फिर चौथे दिन शाम को हम अहमदाबाद हुँचे । एलोपैथिक इलाज से रोग चला गया परंतु ह बड़ा भारी दुष्प्रभाव दे गया । बकरी तो निकल ायी पर ऊँट घुस गया ।

बुखार उतर गया परंतु फिर न हो जाय इसलिए डॉक्टरों ने ६ गोली का कोर्स दे दिया । हमें तो एक गोली ही बड़ी खतरनाक लगी । मजे की बात थी कि कुछ भी लेता तो मेरा हृदय प्रेरणा करता था कि 'यह लो, यह न लो ।' उस गोली को लेता तो हृदय हिचकता था तो मैंने बोला : 'नहीं-नहीं ।''

डॉक्टर बोले : ''बापूजी ! इतनी तो हमारी ानो ।'' रोते गये ।

मैंने कहा : ''लाओ भाई ! शिवजी जब विष पी गये तो गोलियाँ पीने में क्या लगता है ?''

मैंने ५ गोलियाँ ले लीं तो उन गोलियों ने जो किया उसका मजा निराला था ।

एक दिन के बाद आ हा हा... शरीर में आग-आग... जैसे तवे को रोटी चिपक जाय ऐसे जीभ तालू को चिपक जाय, सूख जाय । बुखार तो नहीं पर मत्थे पर घी लगायें तो गायब ! चुल्लू भर-भर के पैरों पर घी लगायें तो गायब ! मिश्री खाकर पानी पियो तो वह कहाँ गया कुछ पता न चले ! ६ रात, ६ दिन एक मिनट भी नींद नहीं ! फिर भी गुरु की कृपा का आनंद जो आ रहा था वह अब भी है ।

फिर मैंने अंग्रेजी दवावालों को बोला : ''भाई ! अब तुम्हारी 'हीं-हीं...' नहीं चलेगी, हाथाजोड़ी मत करो । अब हम अपने ढंग से उपचार करेंगे ।''

अंग्रेजी दवाओं ने इतना दुष्प्रभाव दिखाया कि मेरी आँखें तिरछी हो गयी थीं, कान, यकृत व गुर्दे खराब हो गये थे । जो डॉक्टर लगे थे वे इंजेक्शन लगा के जाकर रोते थे कि 'हमारे हाथ से यह केस गया हुआ है ।'

सम्भव ही नहीं था विज्ञान के बल से कि आँखें ठीक हो जायें । इतना दुष्प्रभाव कि बैठ नहीं सकें, सो नहीं सकें, लेट नहीं सकें, छटपटायें । पीड़ा ऐसी कि उसके आगे प्रसूति की पीड़ा कुछ भी नहीं है । चिड़िया 'चें' करे तो मानो एक तलवार लग गयी ऐसी पीड़ा होती थी ।

ऐसी पीड़ा में भी जरा-सा याद करते कि 'दुःख किसको हो रहा है ? शरीर को हो रहा है; हम तो उससे न्यारे हैं ।' तो बड़ी हँसी आती थी ।

मन (कराहते हुए) कहता : ''ऐं... ऐं...

ऐं...''

मैंने कहा : ''ऐं-ऐं करता है रे ?'' तो फिर हँसी आती। फिर थोड़ी देर बाद बोलता : ''ऊँ... ऊँ... ऊँ...''

मैंने कहा : ''ऊँ... ऊँ... क्यों करता है ?''

बोले : ''शरीर को आराम मिलता है ।''

मैंने कहा : ''अच्छा, कर लेकिन तू 'ऊँ ऊँ...' कर, मैं देखता हूँ ।''

बोले : ''फिर नहीं होगा ।''

तो इसका भी मजा मैंने लिया । **'मैं' चैतन्य देखता है और करता है मन व शरीर । तो ऐसी सत्संग की बात चलते-फिरते भी पक्की रखो । दुःख, पीड़ा, आपत्ति भगवान (साक्षीस्वरूप परमात्मा) के आगे कोई मायना नहीं रखते ।**

फिर हम कमरे में बंद हो गये । सेवक को बोला कि ''सुबह कमरा खोलना और ऐसे-ऐसे समाधि कर देना । कोई आडम्बर नहीं करना ।'' मैंने प्राणायाम करके प्राण को ऊपर खींच के झटका मारा ताकि ब्रह्मांडव्यापिनी यात्रा पूरी हो जाय, एक-दो बार प्रयास किये । 'मौत आकर मारे उसके पहले हम ब्रह्म में आ रहे हैं ।' तो हो नहीं रहा था। फिर हमने इष्ट में शांत होकर बोला : ''क्या मर्जी है प्रभु आपकी ? रखना है तो डॉक्टरों व दवाइयों के वश का नहीं है और लेना है तो फिर यहाँ रुकावट क्यों आ रही है ?''

अंदर से आवाज आयी : ''रहना है ।''

''रहना है तो फिर अब यह सब कैसे ठीक होगा ?''

बोले : **''नारायणो वैद्यो जाह्नवी औषधिः ।''**

तब से वैद्य मेरे नारायण हैं और गंगाजी औषधि हैं । फिर जैसी प्रेरणा मिलती गयी, खाते-पीते गये । और ये वैद्य बेचारे थोड़ा-बहुत आयुर्वेदिक ढंग से उपचार करते रहे तो मेरा यकृत, गुर्दे, आँख ठीक हो गये और बीमारी के पहले जो शरीर था उससे भी अच्छा हो गया, फुर्तीला हो गया ।

किसीने घर पर, किसीने आश्रम में तो किसीने कहीं - कई बच्चे-बच्चियों ने, कई शिष्यों ने जप किया कि 'हे भगवान ! बापू ठीक हो जायें ।' वह तुम्हारा संकल्प भी काम करता है ।

सर्व रोग-व्याधिनाशक शक्ति का स्रोत



पूज्य बापूजी की मातुश्री माँ महँगीबाजी

जब मेरी माँ की उम्र करीब ८६ वर्ष की थी तब उनका शरीर काफी बीमार हो गया था । यकृत (liver), गुर्दे (kidneys), जठर, प्लीहा (spleen) आदि खराब हो गये थे तथा और भी कई जानलेवा बीमारियों ने घेर लिया था। डॉक्टरों ने कह दिया था कि 'अब २४ घंटे से ज्यादा नहीं निकाल सकती हैं ।'

२३ घंटे हो गये । मैंने अपने ७ दवाखाने सँभालनेवाले वैद्य को कहा : ''महिला आश्रम में माताजी हैं । तू कुछ तो कर भाई !''

वह गया और थोड़ी देर बाद मुँह लटकाये आया, बोला : ''अब माताजी एक घंटे से ज्यादा नहीं निकाल सकती हैं । नाड़ी विपरीत चल रही है ।''

मैं गया । मेरी माँ मुझे पुत्र के रूप में नहीं देखती थीं वरन् जैसे कपिल मुनि की माँ उनको भगवान के रूप में, गुरु के रूप में मानती थीं वैसे ही मेरी माँ मुझे मानती थीं । माँ ने कहा : ''प्रभु ! अब मुझे जाने दो ।''

उनकी श्रद्धा का मैंने सात्त्विक →

आप कहाँ समय लगा रहे हैं ? - पूज्य बापूजी

व्यक्ति ज्यों छोटे विचार को महत्त्व देता है त्यों धीरे-धीरे, धीरे-धीरे पतन की खाई में गिरता है और ज्यों-ज्यों वफादारी से सेवा को महत्त्व देता है त्यों-त्यों उन्नति के शिखर पर चढ़ता जाता है। अपनी योग्यता चाहे अभी न के बराबर हो लेकिन जो योग्यता है उसे ईश्वर की प्रीति के लिए, धर्म की सेवा-रक्षा के लिए ठीक ढंग से उपयोग में लाते हैं तो उस योग्यता का विकास हो जायेगा। अपने जो बच्चे-बच्चियाँ सेवा करते हैं उनके पास कौन-सा प्रमाणपत्र है ? क्या उनके पास कोई पदवियाँ हैं इसलिए सेवा में सफल हो रहे हैं ? नहीं, तत्परता है तो सफल होते हैं। किसीमें तत्परता नहीं है तो वह पड़ा रहेगा संस्था पर बोझा होकर। तत्परता नहीं है तो बस, मुफ्त का खाना सत्यानाश जाना ! फिर बुद्धि ऐसी मारी जायेगी कि इधर-का-उधर, उधर-का-इधर... ऐसा-वैसा करके अशांत हो जायेगा। प्रशांत आत्मा होना है। पैसा चला गया तो फिर कमा सकते हैं, स्वास्थ्य चला गया तो फिर ठीक हो सकता है, मित्र रूठ गया तो उसको मना सकते हैं, मकान छूट गया तो दूसरा ले सकते हैं, गाड़ी निकल गयी तो दूसरी गाड़ी में बैठ सकते हैं पर समय निकल गया, आयुष्य बीत गया तो वह वापस नहीं आयेगा। इसलिए समय को आप कहाँ लगा रहे हैं - कहाँ बरबाद कर रहे हैं और कहाँ आबाद कर रहे हैं इसका ध्यान रखना पड़ेगा। समय बड़ा कीमती है, व्यर्थ की गप्पें मारने में अथवा व्यर्थ की चेष्टाओं में समय बरबाद न करके उसका सदुपयोग करना चाहिए। भगवत्स्मरण, भगवद्-गुणगान, भगवच्चिंतन और भगवत्सेवा-सत्कार्य में समय व्यतीत करना ही समय का सदुपयोग है। ❐

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु यह अंक ध्यान से पढ़ें।

(१) सचमुच स्वतंत्र तो .... ही कर सकते हैं।

(२) शरीर की भिन्नता का हेतु पूर्वकर्मों और भोगों के संस्कार हैं, जिनका स्वयं का हेतु ...... है।

(३) जब .... मिल जाते हैं तो इष्ट का काम पूरा हो जाता है। (उत्तर अगले अंक में)

→ फायदा उठाया।

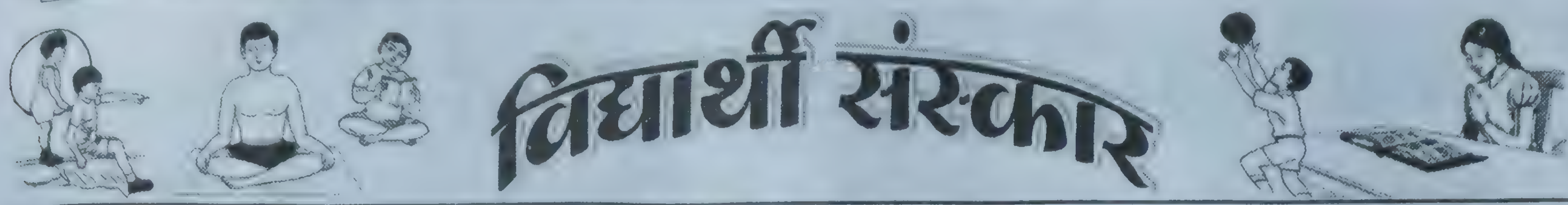
मैंने कहा : ''मैं नहीं जाने दूँगा।''

''मैं क्या करूँ ?''

''मैं मंत्र देता हूँ आरोग्यता का।''

उनकी श्रद्धा और 'मंत्र भगवान' का प्रभाव... माँ ने मंत्र जपना चालू किया। मैं आपको सत्य बोलता हूँ कि एक ही घंटे बाद स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। फिर तो १ दिन, २ दिन... एक सप्ताह... एक महीना... ऐसा करते-करते ७२ महीने तक उनका स्वास्थ्य बढ़िया रहा। कुछ खान-पान की सावधानी, कुछ औषध का भी उपयोग किया गया।

अमेरिका का डॉक्टर पी.सी. पटेल (एम.डी.) भी आश्चर्यचकित हो गया कि '८६ वर्ष की उम्र में माँ के लीवर, किडनी कैसे ठीक हो गये ?' तो मानना पड़ेगा कि **सर्व व्याधिविनाशिनी शक्ति, रोगहारिणी शक्ति मंत्रजप में छुपी हुई है।** ❐

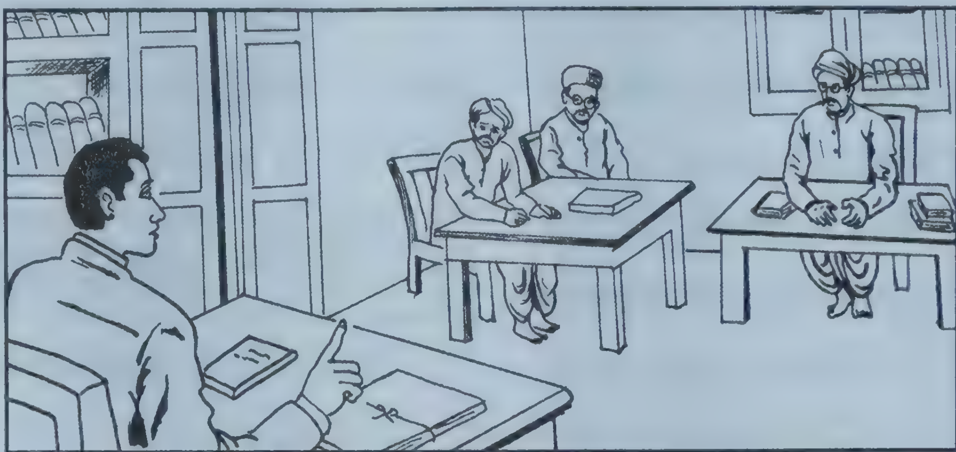


पुरुषार्थी पुरु

- पूज्य बापूजी

पुरुषार्थ करना चाहिए। इस लोक में सफल होने के लिए और आत्मा-परमात्मा को पाने में सफल होने के लिए भी पुरुषार्थ चाहिए।

पुरु नाम का एक लड़का बेचारा महाविद्यालय पढ़ने के दिन देख रहा था। १६ वर्ष की उम्र हुई और एकाएक उसके पिता को हृदयाघात हो गया, वे मर गये। बेटे और माँ पर दुःखों का पहाड़ आ पड़ा। पुरु को एक भाई और एक बहन थी। बड़ा दुःख आ गया, पुरु सोचने लगा : 'अब कौन कमायेगा, घर का खर्चा कैसे चलेगा ? १२वीं अभी पूरी भी नहीं हुई, नौकरी तो मिलेगी नहीं ! क्या करें ?' पुरु की माँ सत्संगी थी, पति की अंत्येष्टि करवायी। लोग बोलते : ''तुम अब कैसे जियोगे, क्या खाओगे ?''



बोले : ''परमेश्वर है।'' पुरु की माँ ने पुरु को सांत्वना दी और पुरु ने अपनी माँ को ढाढ़स बँधाया। दो भाई-बहन और तीसरा पुरु, चौथी माँ। माँ घर पर ही थोड़ा बड़ी, पापड़ आदि बनाती। उनमें लगनेवाली चीज-वस्तु साफ-सुथरी, सस्ती व अच्छी लाती। पहले तो पड़ोसी लोग मखौल उड़ाने लगे लेकिन बाद में वे पड़ोसी भी उनसे ही वे चीजें खरीदने लगे। पुरु भी नौकरी की तलाश करता रहा, पढ़ता रहा। डाक विभाग से एक विज्ञापन निकला कि कोई ११वीं पढ़ा हुआ होगा तो उसको यह नौकरी मिल सकती है - क्लर्क को सहायक क्लर्क चाहिए। पुरु ने उस नौकरी हेतु प्रपत्र (form) भर दिया और घर बैठे पढ़कर बी.ए. करने का निश्चय किया। साक्षात्कार (interview) हुआ, नौकरी मिली। वह जो काम मिले उसको पहले समझता फिर अच्छी तरह तत्परता से लगकर पूरा करता। ऐसा करते-करते उसने डाकघर के प्रधान अधिकारी और अपने वरिष्ठ साहब का भी विश्वास सम्पादन कर लिया। एक तरफ पढ़ता गया, दूसरी तरफ ईमानदारी की सुंदर सेवा से सबका विश्वास सम्पादन करता गया और तीसरी तरफ माँ को कमाकर देता गया। समय बीतता गया, स्नातक (graduate) हुआ और आगे चल के डाकघर का प्रधान अधिकारी हो गया फिर उसकी उससे भी आगे की पदोन्नति हुई।

लोगों ने कहा कि 'पुरु तो एक साधारण विधवा का बेटा और इतना आगे !'

पुरु ने कहा : ''भगवान ने आगे बढ़ने के लिए धरती पर जन्म दिया लेकिन कमाकर आगे बढ़ गये तो कोई बड़ी बात नहीं है; इस कमाई का सदुपयोग करके सत्यस्वरूप परमात्मा को पाने में भी आगे बढ़ने के लिए मनुष्य-जन्म मिला है।''

''ऐ पुरु ! तुम पोस्ट ऑफिस विभाग के एक श्रेष्ठ अधिकारी ही नहीं बल्कि एक →

जिंदगी का राज पाना चाहिए

- पूज्य बापूजी

जिंदगी पथ है मंजिल[1] की तरफ जाने का,
जिंदगी गीत है मस्ती से सदा गाने का ।
जिंदगी में जिंदगी का राज पाना चाहिए[2],
यह न पाया, और सब पाया तो
चिंता करनी चाहिए ॥

१. वास्तविक उद्देश्य - परमात्मप्राप्ति २. जिंदगी के परम रहस्य अपने परमानंदस्वरूप को पाना चाहिए ।

प्रश्नोत्तरी

(१) निम्न में से परमात्मप्राप्ति के साधन कौन-से हैं ?

(क) सत्संग (ख) परमेश्वर के स्वरूप का मनन और संतोष (ग) सात्त्विक दान (घ) तीनों

(२) वास्तव में विद्या कौन-सी है ?

(क) ऐहिक विद्या (ख) आत्मविद्या (ग) योगविद्या (घ) तंत्रविद्या

(३) वास्तव में जीते-जी कौन मरा है ?

(क) धनहीन (ख) सौंदर्यहीन (ग) पुरुषार्थहीन (घ) यशहीन

(४) बड़ा भारी रोग क्या है ?

(क) कोविड-१९ (ख) हृदयरोग (ग) कैंसर (घ) जन्म-मरण (उत्तर इसी अंक में)

कितना भी ढीला विद्यार्थी हो...

- पूज्य बापूजी

दोनों नथुनों से गहरा श्वास लो । मन में भगवन्नाम जपो फिर हरि ॐ का प्लुत गुंजन करो - हरि ओऽऽ... म्... । जब ॐकार का 'म' बोलें तब होंठ बंद कर 'म' का दीर्घ (लम्बा) गुंजन करें ।

इस प्रकार के प्राणायाम करने से मनोबल, बुद्धिबल में विकास होता है, रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है, अनुमान शक्ति, क्षमा शक्ति, शौर्य शक्ति आदि का विकास होता है । रोज १५ मिनट ऐसा करनेवाला विद्यार्थी कितना भी ढीला हो, प्रभावशाली, शक्तिशाली हो जायेगा । तो चाहे आई.जी. बनना है, चाहे डी.आई.जी. बनना है, चाहे कुछ भी बनना है, अपनी अंदर की शक्ति जागृत करो तो अच्छे उद्योगपति भी बन सकते हैं, अच्छे भक्त भी बन सकते हैं और भगवान को प्रकट करनेवाले महापुरुष, संत भी बन सकते हैं, क्या बड़ी बात है ! ❐

→ श्रेष्ठ नागरिक भी हो ।''

पुरु ने कहा : ''श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए श्रेष्ठ सीख चाहिए और वह मुझे सत्संग से, भगवन्नाम के जप और भगवान के ध्यान से मिली है । श्रेष्ठ व्यक्ति वही है जो श्रेष्ठ-में-श्रेष्ठ परमात्मा में विश्रांति पाता है ।''

पुरु वेदांत का सत्संग और आत्मविश्रांति का अवलम्बन लेते हुए आध्यात्मिक जगत में भी बड़ी ऊँचाई को उपलब्ध हुए ।

बड़े-बड़े धनाढ्य, बड़े-बड़े सत्तावान अपने जीवन से नीरसता मिटाने के लिए शराब-कबाब, दुराचार आदि की शरण लेते हैं । वे मनुष्य धनभागी हैं जो संत-महापुरुषों का सत्संग-श्रवण कर आत्मिक उन्नति की कुंजियाँ जान के अपने जीवन को रसमय बना लेते हैं । इससे उनके जीवन में लौकिक उन्नति तो होती ही है, साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी होती है । वे देर-सवेर अपने साक्षीस्वरूप परब्रह्म-परमात्मा का साक्षात्कार कर लेते हैं, अपने 'सोऽहम्' स्वभाव में जग जाते हैं । ❐

क्या आप सचमुच स्वतंत्र हैं ? - पूज्य बापूजी

(स्वतंत्रता दिवस : १५ अगस्त)

१५ अगस्त को देश स्वतंत्र हुआ लेकिन लोग अभी स्वतंत्र नहीं हैं; राग से, द्वेष से, काम से, क्रोध से, मोह से, ईर्ष्या से, पद-प्रतिष्ठा से बँधे हैं। सचमुच स्वतंत्र तो ब्रह्मज्ञानी के वचन ही कर सकते हैं, और कौन स्वतंत्र करेगा !

बाह्य स्वतंत्रता तो शायद १५ अगस्त को मान लें किंतु अभी भीतरी खोखलापन नहीं गया, भीतर से खोखले हुए चले जा रहे हैं। यह मानी हुई, कल्पी हुई स्वतंत्रता है। कल्पित जगत की कल्पित स्वतंत्रता, माने हुए जगत की मानी हुई स्वतंत्रता।

हे वीरपुरुषो ! हे ब्रह्मवेत्ता, आत्मवेत्ता संतो ! हे गीता-गायक श्रीकृष्ण !! आपकी कर्षित-आकर्षित करनेवाली वाणी मेरे भारतवासियों के दिल से उभरे ऐसे दिन जल्दी ला दो, ऐसा कल्याणकारी सौभाग्य ला दो। सिकुड़-सिकुड़ के सदियाँ बीत गयीं, जन्मते-मरते युग बीत गये।

संग सखा सभि तजि गए
कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह बिपति मै
टेक एक रघुनाथ ॥

भगवान से प्रार्थना करो कि 'हे मेरे रघुनाथ ! हे मेरे अंतर्यामी !! हे प्राणिमात्र के आधार !! तू हमें अपने नाम की बख्शीश दे दे, अपने ज्ञान का प्रकाश दे दे, अपने स्वरूप का आनंद दे दे ताकि हम संसारी विकारी आकर्षण से अपने को बचा पायें तब हम सचमुच स्वतंत्र होंगे।'

सच्ची स्वतंत्रता तब है जब आप अपने शुद्ध-बुद्ध स्वरूप को जान लें, सुख को सपना - दुःख को बुलबुला पहचान लें। आप सत्पुरुषों की वाणी सुनने, उनका सान्निध्य पाने, उनके अनुभव को अपना अनुभव बनाने के लिए चलते रहें, इसीमें आप लोगों का मंगल है।

संत तुलसीदासजी कहते हैं :

घट में है सूझे नहीं लानत ऐसे जिंद।
तुलसी ऐसे जीव को भयो मोतियाबिंद ॥

कहाँ तो सुखस्वरूप, मुक्तस्वरूप परमात्मा हमारा आत्मा बन बैठा है फिर भी मिटनेवाली वस्तुओं को, बिखरनेवाली परिस्थितियों को, दुःख देनेवाली और जन्म-मरण में भटकानेवाली बाहर की सृष्टि को हम सत्य मानकर उसमें आकर्षित होते-होते जन्म-मरण की उस पीड़ा में, उस घानी में पेरे जा रहे हैं।

इस स्थूल शरीर से शक्तिशाली है सूक्ष्म सृष्टि और सूक्ष्म सृष्टि, स्थूल सृष्टि को देखने की, सोचने-समझने की जहाँ से सत्ता आती है वह ज्ञानस्वरूप अकाल पुरुष हमारा आत्मा है। उस एक-के-एक अकाल पुरुष को जब तक अपना स्वरूप नहीं पहचाना, जब तक अपने-आपका ज्ञान नहीं हुआ तब तक अष्टसिद्धियाँ मिल जायें, नवनिधियाँ मिल जायें फिर भी जीवात्मा की यात्रा अधूरी मानी जाती है।

पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान।
आसुमल से हो गये, साँई आशाराम ॥

मुझे वे घड़ियाँ याद आयीं और मेरी आँखें गीली हो गयीं, हृदय प्रेम, धन्यवाद और कृतज्ञता से भर गया। मेरी प्रार्थना है कि हनुमानजी के लिए रामजी के बरसने की जो घड़ियाँ आयी थीं,

(शेष पृष्ठ २२ पर)

जब कभी चिंता आये, शोक या हर्ष आये तो समझ लेना चाहिए कि ये आने-जानेवाली चीजें हैं।

आपकी चिंताएँ, दुःख आदि मुझे अर्पण कर दो !

ब्रह्मवेत्ता महापुरुष अपनी ब्रह्ममस्ती में मस्त रहते हुए भी अहैतुकी कृपा करने के स्वभाव के कारण संसार के दुःख, चिंता आदि तापों से तप्त मानव को ब्रह्मरस पिलाने के लिए समाज में भ्रमण करते हुए अनेक अठखेलियाँ करते रहते हैं। एक बार भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज आगरा में सत्संग कर रहे थे। बहनों-माताओं को व्यर्थ चिंता, तनाव व निंदा-स्तुति से बचकर निश्चिंत, स्वस्थ व प्रसन्न रहने की युक्ति बताते हुए स्वामीजी ने कहा : ''स्त्रियाँ घर का श्रृंगार होती हैं। वे चाहें तो घर को स्वर्ग अथवा नरक बना सकती हैं। यदि घर में शांति, प्रेम, आनंद होगा तो घर स्वर्ग की भाँति बन जायेगा परंतु यदि वाद-विवाद, झगड़े, अशांति होंगे तो वह नरक के समान बन जायेगा। बेचारा मर्द सारा दिन काम करके थक-हारकर जब घर में पहुँचे और उस समय धर्मपत्नी उसके सामने अपने दुखड़े रोने लगे तो उसे जिंदगी से भला कैसा आनंद आयेगा ? फुरसत के समय में यदि दो-चार औरतें आपस में मिलती हैं तो किसी-न-किसीकी निंदा करती रहती हैं तथा एक-दूसरे को घर की बातें बताकर अपना रोना रोती हैं। अपना अमूल्य जीवन ऐसे ही व्यर्थ कर देती हैं।



किसीके द्वारा कुछ कहने से क्या होता है ? आप पूरे शहर के लोगों से कहो कि मुझे गालियाँ दें परंतु मैं गालियाँ लूँगा ही नहीं अर्थात् उस ओर ध्यान ही नहीं दूँगा तो मेरा क्या बिगड़ेगा ? हे माताओ ! कुछ ध्यान दो, कुछ सोचो । यदि आपको कोई कुछ देवे और आप लो ही नहीं तो वह चीज वापस उसके पास ही रहेगी। आप एक-दूसरे की बातें इधर-उधर करके अपने दिल को बेचैन मत करो।''

फिर स्वामीजी ने सत्संगियों के सामने एक कपड़ा जो वे हमेशा साथ रखते थे, अपने सामने बिछाया तथा माताओं से कहने लगे : ''हे माताओ ! आपके पास जो चिंताएँ, दुःख आदि हों वे मुझे अर्पण कर दो, इस कपड़े पर डाल दो।'' फिर वे अपने हाथ सीधे लम्बे करके मानो माताओं से उनकी चिंताएँ आदि लेकर कपड़े पर डालने लगे। कहने लगे : ''सब सुनो, देखो, कहीं किसीके पास कोई चिंता रह न जाय, सब मुझे दान में दे दो।'' फिर सत्संगियों को हँसाते-हँसाते, वह कपड़ा उठाते हुए उसे गाँठ बाँधने लगे, बोले : ''अब सब चिंताओं की गठरी भरकर गांधीधाम जा के समुद्र में फेंक दूँगा। आज के बाद अब कोई भी माता चिंता नहीं करे।

चिंता से चेहरो घटे, घटे बुद्धि और ज्ञान।
मानव चिंता मत करो, चिंता चिता समान ॥''

कलियुग में दान की बड़ी भारी महिमा है। शास्त्रों में कहा गया है : **दानं केवलं कलियुगे।**

८ प्रकार के दानों में सत्संग-दान सर्वोपरि है। हमारे प्यारे दादागुरु भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ने सत्संग-दान तो किया ही, साथ ही विनोद-विनोद में सत्संगियों के दुःख, चिंता आदि दूर करने के लिए दान के रूप में उन्हें माँग लिया। यही है करुणावान, दया की खान ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों की महानता, सरलता और विलक्षणता ! उनकी हर चेष्टा जीवमात्र के कल्याण के लिए होती है। जो दोष, दुर्गुण, दुःख, चिंता छोड़ने में असम्भव लगते हैं वे ऐसे महापुरुषों के दर्शन-सत्संग, उनकी प्रेमभरी लीलाओं के स्मरण-चिंतन तथा उनकी बतायी सरल-से-सरल युक्तियों को जीवन में उतारने से सहज में ही छूट जाते हैं। ❐

तत्त्व दर्शन

देहत्रय-साक्षी विवेक

(पिछले अंकों में आपने 'स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर का विवेक' पढ़ा, अब आगे...)

कारण शरीर का विवेक

स्थूल और सूक्ष्म दोनों शरीरों का बीज क्या है ? अर्थात् उनकी विविधता का निमित्त और मूल उपादान कारण क्या है ? ये दोनों शरीर पंचभूतों के विकार होने से इनका मूल उपादान त्रिगुणमयी प्रकृति या अव्यक्त ही है। अव्यक्त से ही 'व्यक्त शरीर' उत्पन्न होता है । शरीर की भिन्नता का हेतु पूर्वकर्मों और भोगों के संस्कार हैं, जिनका स्वयं का हेतु अज्ञान है ।

अपने ब्रह्मत्व के अज्ञान के कारण प्रकृति अन्यरूप से कल्पित है, अन्यथा कार्य-कारण की कल्पना से उपलक्षित (इशारे द्वारा बताया हुआ) जो आत्मतत्त्व है वही वेदांत शास्त्र में प्रकृति या उससे उपलक्षित ईश्वर कहलाता है। इसलिए वेदांत में अज्ञान या अविद्या ही मूल कारण है । वेदांत में माया, अविद्या, अज्ञान, अव्यक्त, अव्याकृत, प्रकृति - सब एक ही तत्त्व के नाम हैं ।

अतः **संसार का मूल कारण अज्ञान होने से जीवात्मा का कारण शरीर 'अज्ञान' बताया गया है । इसका लक्षण है : 'मैं नहीं जानता' यह ज्ञान ।** इस शरीर का अनुभव सुषुप्ति अवस्था में होता है जब कि मनुष्य न तो जाग्रत अवस्था के अनुसार विषयों की कामना करता है और न स्वप्नावस्था की तरह स्वप्न देखता है, उस समय सूक्ष्म शरीर में सिर्फ जड़ प्राण तो चलते हैं किंतु अन्य कोई चेष्टा या ज्ञान नहीं होता । असल में तो प्राणों का चलना भी मनुष्य की अपनी सुषुप्ति का अनुभव नहीं है। दूसरों की सुषुप्ति की अवस्था में प्राण चलता हुआ देखकर अपने ऊपर उसका अध्यारोप कर लेता है ।

सुषुप्ति से उठने पर वह मनुष्य अपने अनुभव को इन शब्दों में कहता है : 'मैं सुख से सोया, कुछ पता नहीं रहा ।' स्पष्ट है कि इस अवस्था में उसने अज्ञान का (कुछ पता नहीं का) अनुभव किया । यह अज्ञान ही कारण है । उस समय अनुभवकर्ता (साक्षी) स्वयं उपस्थित रहने पर भी जागने पर अपने भाव का (अपने होने का) वर्णन नहीं करता बल्कि दृश्य के अभाव का वर्णन करता है । इस सुषुप्ति अवस्था से यह भी स्पष्ट है कि साक्षी भाव और अभाव दोनों का साक्षी होता है तथा भाव और अभाव दोनों का साक्षी एक ही होता है क्योंकि जो जाग्रत और स्वप्न के दृश्य को देखनेवाला था वही सुषुप्ति में उनके अभाव को देखनेवाला होता है ।

यह अज्ञान जाग्रत व स्वप्न में भी उपलब्ध होता है। लोग कहते हैं : 'मैं ब्रह्म को नहीं जानता... मैं अमुक विषय को नहीं जानता।' यह 'न जानना' ही कारण शरीर है । (क्रमशः) ❒

(पृष्ठ २० से 'क्या आप सचमुच...' का शेष)

श्री रामकृष्णजी के चरणों में विवेकानंदजी के लिए जो घड़ी आयी थी, सलूका-मलूका के लिए कबीरजी के हृदय के बरसने की जो घड़ी आयी थी, गुरु नानकजी के हृदय में बाला-मरदाना के लिए वास्तविक स्वरूप का ज्ञान बरसाने की जो घड़ी आयी थी, आपके जीवन में भी भगवान करे कि सच्ची स्वतंत्रता देनेवाली वे घड़ियाँ पाने की उत्कंठा जग जाय ।

पूर्ण स्वतंत्रता उसी दिन मिलेगी जब प्रकृति और जन्म-मरण के प्रभाव का चक्कर उखाड़ के फेंकने में तुम अपने को सक्षम अनुभव करोगे । उसी दिन तुम्हारी वास्तव में स्वतंत्रता है । ❒

दीप-प्रज्वलन अनिवार्य क्यों ?

संस्कृति विज्ञान

भारतीय संस्कृति में धार्मिक अनुष्ठान, पूजा-पाठ, सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दीपक प्रज्वलित करने की परम्परा है । दीपक हमें अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करके पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने का संदेश देता है । आरती करते समय दीपक जलाने के पीछे उद्देश्य यही होता है कि प्रभु हमें अज्ञान-अंधकार से आत्मिक ज्ञान-प्रकाश की ओर ले चलें । मृत्यु से अमरता की ओर ले चलें ।

मनुष्य पुरुषार्थ कर संसार से अंधकार दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाये ऐसा संदेश दीपक हमें देता है । दीपावली पर्व में, अमावस्या की अँधेरी रात में दीप जलाने के पीछे भी यही उद्देश्य छुपा हुआ है । घर में तुलसी की क्यारी के पास भी दीप जलाये जाते हैं । किसी भी नये कार्य की शुरुआत भी दीप जलाकर की जाती है । अच्छे संस्कारी पुत्र को भी कुल-दीपक कहा जाता है ।

दीपक की लौ किस दिशा में हो ?

पूज्य बापूजी के सत्संग-अमृत में आता है : ''आप दीया जलाते हैं, आरती करते हैं, इसका बहुत पुण्य माना गया है परंतु आरती के दीपक की बत्ती या लौ अगर पूर्व की तरफ है तो आयु की वृद्धि होगी, अगर उत्तर की तरफ है तो आपको धन-लाभ में मदद मिलेगी, यदि दक्षिण की तरफ है तो धन-हानि और पश्चिम की तरफ है तो दुःख व विघ्न लायेगी। इसीलिए घर में ऐसी जगह पर आरती करें जहाँ या तो पूर्व की तरफ लौ हो या तो उत्तर की तरफ। ऋषियों ने कितना-कितना सूक्ष्म खोजा है !

लौ दीपक के मध्य में लगाना शुभ फलदायी है। इसी प्रकार दीपक के चारों ओर लौ प्रज्वलित करना भी शुभ है ।

दीपक के समक्ष इन श्लोकों के पठन से विशेष लाभ होता है :

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदाम् ।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ।।



'शुभ एवं कल्याणकारी, स्वास्थ्य एवं सुख-सम्पदा प्रदान करनेवाली तथा शत्रुबुद्धि का नाश करनेवाली हे दीपज्योति ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।'

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ।।

'उस परब्रह्म-प्रकाशस्वरूपा दीपज्योति को नमस्कार है । वह विष्णुस्वरूपा दीपज्योति मेरे पाप को नष्ट करे।'

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
(गीता : १३.१७)

ज्योतियों-की-ज्योति आत्मज्योति है । जिसको सूर्य प्रकाशित नहीं कर सकता बल्कि जो सूर्य को प्रकाश देती है, चंदा जिसको चमका नहीं सकता अपितु जो चंदा को चमकाती है वह आत्मज्योति है। महाप्रलय में भी वह नहीं बुझती । उसके प्रतीकरूप में यह दीपक की ज्योति जगमगाते हैं ।

दीपज्योतिः परब्रह्म... अंतरात्मा ज्योतिस्वरूप है, उसको नहीं जाना इसलिए साधक बाहर की ज्योति जगाकर अपने गुरुदेव की आरती करते हैं :

ज्योत से ज्योत जगाओ
सद्गुरु ! ज्योत से ज्योत जगाओ ।

मेरा अंतर तिमिर मिटाओ,
सद्गुरु ! ज्योत से ज्योत जगाओ।
अंतर में युग-युग से सोयी,
चितिशक्ति को जगाओ ॥...

यह अंदर की ज्योत जगाने के लिए बाहर की ज्योत जगाते हैं। इससे बाहर के वातावरण में भी लाभ होता है।

दीपो हरतु मे पापं... दीपज्योति पापों का शमन करती है, उत्साह बढ़ाती है लेकिन दीपज्योति को भी जलाने के लिए तो आत्मज्योति चाहिए और दीपज्योति को नेत्रों के द्वारा देखने के लिए भी आत्मज्योति चाहिए। यह आत्मज्योति है तभी नेत्रज्योति है और नेत्रज्योति है तभी दीपज्योति है, वाह मेरे प्रभु ! भगवान का चिंतन हो गया न ! आपस में मिलो तो उसीका कथन करो, उसीका चिंतन करो, आपका हृदय उसके ज्ञान से भर जाय।

दीप-प्रज्वलन का वैज्ञानिक रहस्य

दीया इसलिए जलाते हैं कि वातावरण में जो रोगाणु होते हैं, हलके परमाणु होते हैं वे मिटें। मोमबत्ती जलाते हैं तो अधिक मात्रा में कार्बन पैदा होता है और दीपक जलाते हैं तो दीपज्योति से नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है, सात्त्विकता पैदा होती है, हानिकारक जीवाणु समाप्त होते हैं।''

घी या तेल का दीपक जलने से निकलनेवाला धूआँ घर के वातावरण के लिए शोधक (Purifier) का काम करता है और स्वच्छ व मनमोहक वातावरण रोगप्रतिरोधी तंत्र को मजबूत करने में सहायक है। ❑

दशरथजी की सभा में छलका जनकजी के दूतों का ज्ञानामृत

जब राजर्षि जनक के दूतों ने महाराज दशरथ को भगवान श्रीरामचन्द्रजी द्वारा शिव-धनुष टूटने का समाचार सुनाया तब भाव से उनका हृदय भर आया और अत्यधिक स्नेह के कारण वे अपने पद की गरिमा भूल गये और दूतों को पास बैठाकर कहने लगे :

''भैआ कहहु कुसल दोउ बारे।

भैया ! क्या मेरे दोनों नन्हे पुत्र कुशल हैं ?''

जनकपुर के दूत चकित होकर सोचने लगे, 'इन्होंने कैसी विलक्षण दृष्टि पायी है - जिन्होंने धनुष तोड़ दिया वे इन्हें नन्हे-से बालक दिखाई दे रहे हैं ! आश्चर्य है ! पत्र में पढ़ चुके हैं, फिर भी कुशल पूछ रहे हैं।'

दूत मौन हैं। दूतों की चुप्पी से दशरथजी को संदेह हुआ कि 'इन लोगों को पत्र दे दिया होगा, जिसे लेकर चले आये होंगे। शायद राम को देखा नहीं है।' वे पूछते हैं कि ''तुमने मेरे पुत्रों को देखा या नहीं ?'' फिर एक शब्द और जोड़ दिया : ''अच्छा, देखा है तो क्या अपनी आँखों से देखा है ? अगर अपनी आँख से देखा है तो अच्छी तरह से देखा कि नहीं ?''

जब दूत कुछ बोले नहीं तो स्वयं बताने लगे कि ''मेरा एक पुत्र तो साँवले और दूसरा गोरे रंग का है। वे धनुष-बाण लेकर चलते हैं। विश्वामित्र जैसे मुनि के साथ हैं।''

दूत मौन ही हैं इसलिए उन्होंने आगे कहा : ''अगर पहचानते हैं तो

पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ।

दूर से तो कोई भी चर्चा सुन लेता है पर स्वभाव का पता तो पास जाकर ही चलता है ! तो क्या आप उनके स्वभाव को जानते हैं ?''

राजा दशरथ प्रेम से बार-बार इस प्रकार पूछने लगे। फिर भी दूत नहीं बोले तो उन्होंने प्रश्न किया : ''यह प्रश्न मेरे दिल में इसलिए बहुत उठ रहा है क्योंकि मैंने सुना है जनक विदेह हैं, देह की भावना से ऊपर हैं, फिर ऐसे विदेह

(जनक) ने उन्हें कैसे जाना ?

कहहु बिदेह कवन बिधि जाने ।''

ये प्रेमभरे वचन सुनकर दूत मुस्कराये और कहा : ''हे राजाओं के मुकुटमणि ! सुनिये, आपके समान धन्य और कोई नहीं है, जिनके राम-लक्ष्मण जैसे पुत्र हैं, जो दोनों विश्व के भूषण हैं। आपके पुत्र पूछने योग्य नहीं हैं।

पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे ॥

'वे पुरुषसिंह तीनों लोकों के प्रकाशस्वरूप हैं।'

(श्री रामचरित. बा.कां. : २९१.१)

महाराज ! आप यह कह रहे हैं लेकिन आपके पुत्र जो हैं वे प्रकाश में देखने के लिए नहीं हैं अपितु स्वयं प्रकाशित करने के लिए हैं। सारे संसार में जो दिखाई दे रहा है, उनके प्रकाश से ही दिखाई दे रहा है।''



बड़ा दार्शनिक सूत्र देते हुए उन्होंने कहा कि ''अँधेरे में कोई वस्तु खो जाय और न मिले तो कहा जाता है कि 'अब तो प्रकाश की आवश्यकता है, दीया जलाकर ढूँढ़ लो ।' पर क्या सूर्योदय के बाद कोई यह कहता है कि 'जरा दीपक लेकर देखो कि सूरज निकल आया कि नहीं ?' यह तो उलटी बात होगी, कारण कि सूरज निकलने के बाद यही कहा जाता है कि 'अब दीपक की क्या आवश्यकता है, इसे बुझा दो ।'

तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे ।
देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे ॥

हे नाथ ! उनके लिए आप कहते हैं कि 'उन्हें कैसे पहचाना ?' क्या सूर्य को हाथ में दीपक लेकर देखा जाता है ?''

(श्री रामचरित. बा.कां. : २९१.२)

सीधा-सा तात्पर्य है कि बुद्धि ही दीपक है और संसार की वस्तुओं को देखने के लिए बुद्धि के दीये को जलाने की आवश्यकता है। पर परम प्रकाशक जब स्वयं प्रकट हो जायें, उस समय बुद्धि के प्रकाश की कोई आवश्यकता नहीं है।

फिर दूत आगे कहते हैं : ''आपके बड़े राजकुमार अत्यंत शीलवान और विनयवान हैं। उनमें कोमलता है तथा छोटे राजकुमार अत्यंत तेजस्वी हैं, जिन्हें देखकर ही जो बुरे राजा हैं वे काँपने लगते हैं। आपने जो पूछा कि 'अपनी आँखों से देखा कि नहीं और विदेह ने कैसे जाना ?' तो महाराज ! हमें तो आपकी बात कुछ उलटी दृष्टि आ रही है । इनको विदेह ही जान सकते हैं ! जो मात्र 'देह' देखनेवाले हैं वे क्या जानें ! वे तो उनको भी एक देह में घिरा हुआ मान लेंगे। आपने जब यह कहा कि 'भली प्रकार देखा कि नहीं ?' तो उनको देखने के बाद अब दिखाई देना ही बंद हो गया।

देव देखि तव बालक दोऊ ।
अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥

'हे देव ! आपके दोनों बालकों को देखने के बाद अब आँखों के नीचे कोई आता ही नहीं (हमारी दृष्टि पर कोई चढ़ता ही नहीं) ।''

(श्री रामचरित. बा.कां. : २९२.३)

जब रोम-रोम में रमनेवाला सर्वव्यापी राम ज्ञानचक्षु से भली प्रकार से दिखाई देता है तो फिर और कुछ नहीं दिखाई देता, पूरा दृश्य-प्रपंच भी चैतन्यस्वरूप परमात्मा का आनंद-उल्लास जान पड़ता है । जनकजी के दूतों के ज्ञान की मधुरता छलकाते वचन सुनकर सभासहित राजा दशरथ प्रेम में मग्न हो गये। ❐

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

प्यारे सद्गुरु से मिलाओ



– गुरु रामदासजी

हे राम ! हम चातक हैं । मैं दीन चातक तुम हरि के आगे यह विनती करता हूँ कि मुझे मेरे प्यारे सद्गुरु से मिलाओ तो मैं तुम्हारी ठीक-ठीक भक्ति करूँ । जब मनुष्य विश्वेश्वर हरि की कृपा जीवन में धारण करता है तब सद्गुरु की भक्ति करने की सद्बुद्धि उसे मिलती है । मेरा सद्गुरु के अतिरिक्त दूसरा कोई सहायक नहीं है । सद्गुरु मेरे प्राण हैं अर्थात् मेरा जीवन हैं । मेरे गुरुदेव बाबा नानकजी कहते हैं कि जब सद्गुरु ने हरिनाम दृढ़ करवाया तब मैंने सत्यस्वरूप (अमिट) हरि का ध्यान किया । हे परमात्मा ! मैं दीन चातक हूँ और तुमसे विनती करता हूँ (कि मुझे सद्गुरु का दर्शन कराओ) ।

आप परम शांति चाहते हैं तो...



– संत पथिकजी

बुद्धिमान मनुष्यो ! यदि आप वास्तव में परम शांति चाहते हैं, यदि आप लाखों वर्षों में पूरे न होनेवाले कार्य को इस जीवन के कुछ वर्षों में, महीनों में पूरा करना चाहते हैं तो संत-सद्गुरु की शरण में रहकर उनकी आज्ञानुसार कर्तव्यों का पालन कीजिये । उनके शब्दों को सुनिये, ध्यान दीजिये, मनन कीजिये ।

एक सद्गुरु-आश्रय हितकारक



– पूज्य मोटा

साधना में एकाश्रय की विशेष आवश्यकता है । जिन्हें सद्गुरु माना है, उन्हींके अधीन रहना और उन्हींके मार्गदर्शन में बढ़ते रहना अपने लिए हितकारक है ।

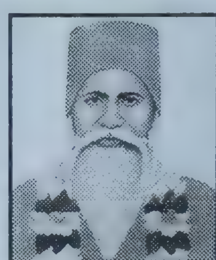
विपत्ति दूर करने के लिए क्या करें ?



– स्वामी प्रणवानंदजी

जब भी, जहाँ, जिस अवस्था में क्यों न रहो, उसी अवस्था में मन को गुरुमुखी कर रखने से जीवन में कोई विपत्ति नहीं आयेगी (कई बाहरी विपत्तियाँ टल जायेंगी और जो प्रारब्धवश आ गयीं उनका भी समत्वयोग के प्रभाव से हम पर कोई असर नहीं पड़ेगा) ।

संतों की सनातन रीति



– संत टेऊँरामजी

संतन की यह रीति सनातन,
सबको प्रेम पिलाते हैं ॥
काम क्रोध मद ताप क्लेशा,
युक्ति साथ जलाते हैं ।
धर्म कर्म की नीति सिखाकर,
सीधी राह चलाते हैं ॥
जड़ चेतन की ग्रंथि खोलें,
निजस्वरूप मिलाते हैं ।
जीव ईश का भेद मिटाकर,
एक ब्रह्म दिखलाते हैं ॥
आत्म का उपदेश बताकर,
मन से जगत भुलाते हैं ।
कहता टेऊँ द्वन्द्व दूर कर,
सम की सेज सुलाते हैं ॥

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

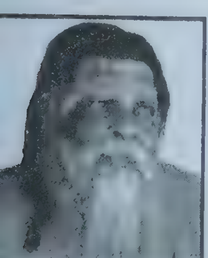
(१) मोक्ष (२) गुरुमुख (३) सद्गुरु का सत्संग

बापूजी को बाहर लाने में ही देश व समाज का हित है

श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर नवलकिशोरदासजी, महामंत्री, संत महामंडल : समाज में अंतिम पंक्ति का व्यक्ति भी किस प्रकार धार्मिक और साधना-परायण हो सकता है इस पर आशारामजी बापू ने बहुत बल दिया। बापूजी का एक ही अपराध था कि उन्होंने वनवासी क्षेत्रों में धर्मांतरण को रोका। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि 'न्यायपालिका को बापूजी की निर्दोषता समझ में आये, बापूजी का जो यह शारीरिक दुःख है वह समाप्त हो और वे समाज को पुनः चेतना देने हेतु जल्दी बाहर आयें।'



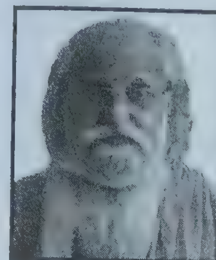
श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर श्री महंत लक्ष्मणदासजी महाराज, इंदौर : भारत के अंदर अन्याय कहा जाय तो वह आशारामजी बापू पर किया गया है। जो वेद-पुराण की नीति सिखाते थे उनको जेल में डाल दिया गया ! यह अन्याय है, अनीति है, अधर्म है।



आशारामजी बापू एक लोकसंत हैं, मार्गदर्शक हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए एक संत के साथ अन्याय किया जा रहा है ! यह केवल आशारामजी बापू को आहत नहीं किया गया है बल्कि उनके सम्पूर्ण अनुयायियों को, समाज को और संतों को भी आहत किया गया है क्योंकि वे राष्ट्रभक्त हैं, सनातन धर्म के रक्षक हैं।

अगर देश का, समाज का हित चाहते हैं तो ऐसे संतों का आशीर्वाद प्राप्त करें, उनको दंडित नहीं करें। इससे जो बाधाएँ देश में आयी हैं वे तत्काल दूर हो जायेंगी। नहीं तो एक बाधा आयी है फिर और भी आयेंगी।

संतों के ऊपर अन्याय-अत्याचार करना यह रावण या कंस की नीति अपनायी जा रही है। यह बहुत गलत है।



जगद्गुरु स्वभूराम देवाचार्य पीठाधीश्वर श्री राधामोहन शरण देवाचार्यजी महाराज, मथुरा : संत आशारामजी ने बहुत अच्छे काम किये हैं। उन्हें अब तक जमानत नहीं मिली यह बड़े दुःख की बात है। उन्होंने संस्कृति-विरुद्ध कार्यों के खिलाफ आवाज उठायी तो उनको ही जेल में डाल दिया। यह सब संस्कृतिहितैषियों में डर पैदा करने की चाल है कि 'कहीं हम भी आवाज उठायें तो हमारे ऊपर भी आरोप लाद देंगे !' लेकिन यह चाल विफल हुई है।



स्वामी अमृतानंदजी उर्फ आनंद गोपालदासजी महाराज, उदासीन अखाड़ा, हरिद्वार : अन्याय की भी एक सीमा होती है। जब उस सीमा का अतिक्रम करते हैं तो विनाश-ही-विनाश देखने को मिलता है। पूज्य आशारामजी बापू ने हिन्दुओं के लिए बहुत कुछ बलिदान दिया लेकिन दुष्प्रचार करनेवालों एवं स्वार्थी तत्त्वों के कारण उनको आज तक एक दिन का तो क्या एक घंटे तक का पेरोल नहीं मिल पा रहा है जबकि वे इतने ज्यादा वयोवृद्ध हैं और अस्वस्थ हैं।

आशारामजी बापू को केवल इसलिए फँसाया गया है कि उन्होंने धर्मांतरण को रोका और सनातन धर्म की रक्षा के लिए कई तरह के कार्य किये। मैं चाहता हूँ कि देश की जनता जागे और मीडिया द्वारा विकृत करके जो दिखा दिया जाता है उस पर भरोसा न करके सच्चाई की तरफ जाय।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

ध्यान-मार्ग के असाधनों से बचें

(‘ध्यान में उपयोगी महत्त्वपूर्ण १२ योग’ पिछले अंक से आगे)

अगर असाधन से बचा जाय तो साधना में शीघ्र ही सफलता मिलती है। ध्यान-मार्ग के मुख्य असाधन क्या हैं और उनसे कैसे बचें इसका सहज, सुंदर मार्गदर्शन पूज्य बापूजी की अमृतवाणी से हमें इस प्रकार मिलता है :

हताश-निराश न हों

''समुद्र के भीतर रत्न खोजे जाते हैं लेकिन जो रत्न खोजते हैं उनको कई बार असफल भी होना पड़ता है। रत्न ढूँढ़नेवाले गोताखोरों को कई बार खाली हाथ ही आना पड़ता है लेकिन वे कोशिश करना नहीं छोड़ते, हारते नहीं, थकते नहीं, टूटते नहीं, विश्वास को नहीं खोते वरन् अथक प्रयत्न, अदम्य साहस और भरपूर निष्ठा के साथ फिर-फिर से गोता लगाते हैं और वे पुरुषार्थी रत्न खोज ही लेते हैं। अगर निराश होते तो लाखों के रत्नों से हाथ धोना पड़ता।

बाहरी नश्वर धन को प्राप्त करने के लिए भी जब उन गोताखोरों में अदम्य साहस और उत्साह होता है तो जिनको आत्मा-परमात्मारूपी शाश्वत हीरा प्राप्त करना है ऐसे उत्तम साधक भला अपने उत्साह को क्यों बलि चढ़ायेंगे ? निराश-हताश क्यों होंगे ? आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों... फिर-फिर से गोता, फिर-फिर से गहराई में... जो नयी शक्ति, नयी उमंग के साथ, पूरे विश्वास के साथ फिर-फिर से प्रयत्न जारी रखते हैं वे अंततः सफल हो ही जाते हैं, गुरुकृपा प्राप्त कर ही लेते हैं, परमात्मानुभव प्राप्त कर ही लेते हैं। दिव्य - अति दिव्य अनुभव उनके भीतर प्रकट होने लगते हैं। अध्यात्म का रास्ता अटपटा जरूर है, खटपट भी थोड़ी-बहुत होती है और समझ में भी झटपट नहीं आता है लेकिन अगर थोड़ा-सा भी समझ में आ जाय, धीरज न टूटे, साहस न टूटे और परमात्मा को पाने का लक्ष्य न छूटे तो उन्हें प्राप्ति हो ही जाती है। असम्भव कुछ नहीं, सब सम्भव है। जहाँ चाह होती है वहाँ राह भी मिल जाती है।

छल-कपट का त्याग करें

जितना समय संसार के पीछे लगाया बदले में उतना नहीं मिला, न मिलेगा वरन् जितना मिला वह भी छूट जायेगा। उससे आधा समय भी अगर भगवान के प्रति लगाते, परमात्म-ध्यान और परमात्म-शांति में व्यतीत करते तो स्थिति कुछ और होती, कुछ निराली होती क्योंकि सृष्टिकर्ता से कुछ भी छुपा नहीं है। चाहिए केवल विश्वास, दृढ़ता, साहस, लगन...

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।...

(श्री रामचरित. सुं.कां. : ४३.३)

निर्मलता, पवित्रता...

खोपड़ी में जितना बाहर का कचरा भरोगे उतना ही निकालना पड़ेगा। पढ़ा हुआ कपटी उतनी जल्दी भगवान को नहीं पा सकता जितनी जल्दी एक सरल अनपढ़ पा सकता है। पढ़े हुए को तो जो खोपड़ी में भरा है उसे पहले निकालना पड़ता है जबकि अनपढ़ की कैसेट कोरी होती है। उसने कचरा कम भरा हुआ होता है अतः वह निर्मल और निर्दोष जल्दी हो पायेगा जबकि पढ़ा-लिखा देरी से होगा। परमात्मा के पास आपकी अक्ल-होशियारी नहीं चल सकती है। आपकी पदवियाँ और प्रमाणपत्र वहाँ नहीं चल पायेंगे। निर्मलता, पवित्रता और स्नेह ही चलेगा। उसके बनकर, उसके हो के नाचोगे तो चलेगा, वह प्रसन्न होगा। उसके होकर जो भी करोगे, वह प्रसन्न होगा। **शर्त यही है कि मिटना पड़ता है, उसका बनना और रहना पड़ता है। बगैर उसके काम नहीं चल सकता।** बीज जब तक अपना अस्तित्व रखता है, तब →



बापूजी से प्रेरित शिविर ने बदली जीवनधारा

सन् २०१८ में मेरी शादी हुई और मैं ससुराल आयी तो मुझे पता चला कि मेरे पतिदेव आशारामजी बापू के शिष्य हैं। मैं मॉडर्न जमाने की थी। मुझे पूजा-पाठ करनेवाला पति बिल्कुल पसंद नहीं था। मैंने मीडिया में बापूजी के बारे में बहुत-सी उलटी-पुलटी बातें सुनी थीं। पतिदेव का आश्रम जाना मुझे अच्छा नहीं लगता था तो घर में आये दिन हमारे बीच झगड़े होते थे। फिर भी वे समझा-बुझाकर मुझे आश्रम ले जाते थे।

२०१९ में अहमदाबाद आश्रम में महिला उत्थान मंडल का ५ दिवसीय जप-अनुष्ठान शिविर 'चलें स्व की ओर...' चल रहा था। पतिदेव ने मुझे जैसे-तैसे शिविर में भर्ती करवा दिया।

शिविर में मैंने देखा कि बहनें ब्राह्ममुहूर्त में उठकर बड़ी श्रद्धा से ध्यान, जप करती हैं, बड़े आदर से सत्संग सुनती और सेवा करती हैं। महासंकल्प के समय 'बापूजी आओ... जल्दी आओ...' ऐसा पुकारते हुए उनकी आँखों से आँसू छलक पड़ते हैं। यह सब मेरे लिए बड़ा आश्चर्यकारक था, साथ ही मेरी गलत मान्यताओं को तोड़नेवाला भी था। आखिरी दिन मैं व्यासपीठ के पास जा के बापूजी की तस्वीर के आगे खड़ी होकर प्रार्थना करने लगी कि 'बापू ! मेरे घर में आये दिन झगड़े होते रहते हैं। मैं हमेशा बीमार भी रहती हूँ। मुझे भी कुछ तो अनुभव हो जाय।'

दूसरे ही दिन बापूजी स्वप्न में आये और बोले : ''जो हो रहा है होने दे, सब भगवान की मर्जी से हो रहा है। यह ठीक से समझ ले, तेरे जीवन के सारे कष्ट दूर हो जायेंगे।''

बापूजी के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी। मैंने सुबह जल्दी उठकर जप, 'श्री आशारामायणजी' का पाठ आदि करने का व नियमित आश्रम जाने का नियम बना लिया। बापूजी की कृपा से धीरे-धीरे मेरी सारी बीमारियाँ दूर होने लगीं। घर के झगड़े शांत हो गये। मेरी डिलीवरी के समय डॉक्टरों ने कहा था कि 'आपका बच्चा बड़ा है, ऑपरेशन करना ही होगा।' लेकिन मैंने बापूजी के सत्संग में सामान्य प्रसूति हेतु देशी गाय के गोबर के रस का उपाय सुना था। मैंने वह प्रयोग किया तो मेरी सामान्य प्रसूति हुई और मुझे स्वस्थ संतान की प्राप्ति हुई।

अनमने भाव से, श्रद्धारहित होकर मेरे आश्रम जाने पर भी कृपालु बापूजी ने अपनी अहैतुकी कृपा बरसायी और मेरा जीवन ही बदल दिया। अब तो बस हर पल एक ही प्यास, तड़प बनी रहती है कि कैसे भी करके पूज्य बापूजी के दर्शन हो जायें और उनसे मंत्रदीक्षा मिल जाय।

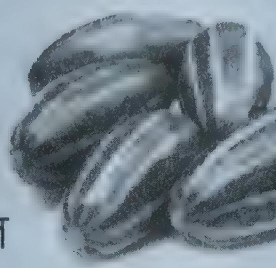
– सोनी यादव
सचल दूरभाष : ९८२५६९५३२८

→ तक पौधा नहीं बन पाता। पौधा अगर अपना अस्तित्व बनाये रखे तो विशाल वृक्ष नहीं बन पाता इसलिए मिटो... खो जाओ... जितना खोओगे, जितना मिटोगे उतना ही पाओगे। **गुरुभक्तियोग एक समर्पण का मार्ग है, मिटने का मार्ग है, हटने का मार्ग है, खोने का मार्ग है, अहं का नामोनिशान तक मिटा देने का मार्ग है।** फिर किसीकी गाली या प्रशंसा उसे प्रभावित नहीं करती क्योंकि वह मिट चुका है, जीते-जी मिट चुका है। मरकर तो सभी मिटते हैं, सभी खोते हैं लेकिन फिर क्या ? जो जीते-जी मिट चुके, जीते-जी खो चुके, जीव मिटकर शिव बन चुके वे ही धन्य हैं ! ॐ शांति... खूब शांति... गहरी शांति...''

(क्रमशः) ❐

स्वास्थ्यवर्धक एवं उत्तम पथ्यकर 'परवल'

आयुर्वेद के अनुसार परवल स्निग्ध, उष्ण, पचने में हलका, पाचक, रुचिकर एवं त्रिदोषशामक है । यह बल-वीर्यवर्धक, हृदय-हितकर व रक्तशुद्धिकर है। यह कफ, बुखार व कृमि का नाश तथा अपानवायु एवं मल-मूत्र का निष्कासन करनेवाला है।



परवल अजीर्ण, अम्लपित्त (hyperacidity), पीलिया तथा यकृत (liver) व पेट के रोग, त्वचा-रोग, बवासीर, सूजन, रक्तपित्त आदि में लाभदायी है।

आधुनिक अनुसंधानों के अनुसार परवल में प्रोटीन और विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। साथ ही इसमें विटामिन 'सी', रेशे (fibres) तथा कैल्शियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, सोडियम, पोटैशियम, लौह, सल्फर आदि तत्त्व भी पाये जाते हैं। मधुमेह (diabetes) तथा कोलेस्ट्रॉल की वृद्धि में इसका सेवन लाभदायी है।

घी में जीरे का छौंक लगा के बनायी गयी परवल की सब्जी पाचन-तंत्र को सुधारने में लाभदायी है क्योंकि इसमें दीपन (भूखवर्धक) व पाचन गुण पाये जाते हैं। यह कब्ज में भी लाभकारी है।

तृप्तिकारक व सुपाच्य सूप

पौष्टिक तथा शीघ्र पचनेवाला होने से परवल रोगियों के लिए उत्तम पथ्यकर है। सूप बनाने के लिए परवल के टुकड़ों को १६ गुना पानी में उबालें। उबालते समय इसमें अदरक, काली मिर्च, जीरा, धनिया व सेंधा नमक डालें। चौथाई भाग जल शेष रहने पर छानकर पिलायें। यह सूप पचने में हलका, तृप्तिकारक एवं शक्तिवर्धक है, साथ ही यह आमदोष (कच्चा रस) दूर करने में लाभदायी है।

शरीर में कफ बढ़ जाने से भूख नहीं लगती हो तथा भोजन की इच्छा न हो तो इस सूप में थोड़ी-सी भुनी हुई हींग व भुनी हुई अजवायन का चूर्ण मिला लें। इस सूप का ३-४ दिन नियमित सेवन करने से लाभ होगा।

बार-बार या अधिक प्यास लगती हो तो परवल उबालकर उसमें सेंधा नमक मिला के सेवन करना लाभदायी है। ❐

बारिश के दिनों में लाभदायी कुछ घरेलू प्रयोग

कफ-खाँसीवाला बुखार : काली मिर्च के ३ ग्राम चूर्ण और अदरक के ५ मि.ली. रस को १० ग्राम शहद★ में मिलाकर दिन में २-३ बार चाटने से कफ-खाँसीवाले बुखार में आराम मिलता है।

कफ व खाँसी : ✻ कफ जम जाने से साँस लेने में तकलीफ हो तो आधा कप गुनगुने पानी में १५-२० मि.ली. गोमूत्र (७ बार कपड़छन करके) अथवा ५ से १० मि.ली. गोमूत्र अर्क★ तथा २-४ चुटकी हल्दी मिलाकर सुबह खाली पेट पियें।

✻ उबले पानी में हल्दी, अजवायन, भीमसेनी कपूर को अथवा केवल अमृत द्रव★ को डालकर सूँघें।

✻ सरसों के तेल में २ कली लहसुन डालकर गरम करें। हलका गर्म रहने पर छाती पर मालिश करें। इससे छाती में जमा हुआ कफ बाहर निकलने में मदद मिलती है।

कब्ज : २० ग्राम ग्वारपाठे में २ से ४ चुटकी काला नमक मिलाकर सुबह-शाम खाली पेट लें अथवा घृतकुमारी रस (Aloe vera juice)★ का सेवन करें। ❐

★ ये संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से व समितियों से प्राप्त हो सकते हैं।

गुरु-आश्रय से वक्र भी वंदनीय

जो लोग अपने जीवन में ईश्वर के मार्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं अथवा ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए प्रत्यक्ष भगवान की प्राप्ति यदि कहीं हो सकती है तो वह सद्गुरु के रूप में हो सकती है। सद्गुरु भगवान का रूप हैं। सद्गुरु साक्षात् भगवान ही हैं। यह नहीं समझ लेना कि सद्गुरु जन्मने-मरनेवाले हैं। वे तो नित्य हैं, ज्ञानस्वरूप हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज श्री रामचरितमानस में गुरुकृपा का वर्णन करते हुए कहते हैं :

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥

'ज्ञानमय, नित्य, शंकररूपी गुरु की मैं वंदना करता हूँ, जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वंदित होता है।'

मन को वश करने की सरल युक्ति

यदि कहो कि गुरु का आश्रय लेने से लाभ क्या है ? तो सुनो ! गुरु का सहारा लेने से वक्र व्यक्ति भी वंदनीय हो जाता है। जब चन्द्रमा गुरु का आश्रय लेता है - शंकरजी के सिर पर आकर बैठ जाता है, तब जो लोग चन्द्रमा को प्रणाम नहीं करते हैं, केवल शंकरजी को ही प्रणाम करते हैं, वे भी गुरु-आश्रित होने के कारण चन्द्रमा को प्रणाम करने लगते हैं।

यदि गुरु और चन्द्रमा एक राशि पर हो जायें तब तो पूछना ही क्या है ? आध्यात्मिक दृष्टि से चन्द्रमा मन का देवता है। मन करने के लिए कभी अच्छी बात भी बताता है और कभी बुरी बात भी बताता है। आप अपने मन की ओर गौर करके देख लो। आप विचार करने पर पाओगे कि मन कभी गलत रास्ते में भी ले जाता है और कभी अच्छे रास्ते में भी ले जाता है। यदि मन के ऊपर गुरु रहें और वह गुरु के मार्गदर्शन अनुसार काम करे तो अच्छा-ही-अच्छा काम करेगा। मन चाहे कितना भी वक्र हो, टेढ़ा हो - उलटे रास्ते से घूम-फिरकर भ्रम के मार्ग में ले जाय लेकिन जब वह गुरु के आश्रित हो जाता है तब उसका टेढ़ापन छूट जाता है। जब मन गुरुमुख हो जाता है तब उसका मनमुखीपना छूट जाता है। इसलिए गुरुकृपा का आश्रय लेने से वक्र भी वंदनीय हो जाता है। जैसी वंदना गुरु की होती है वैसी शिष्य की भी होती है। शिष्य स्वयमेव गुरु हो जाता है। भला बताओ ! इससे बढ़कर भी कोई लाभ है ? गुरुकृपा-आश्रय लेने में लाभ-ही-लाभ है।

(सद्गुरु कृपा करके वक्र को भी वंदनीय क्यों बनाते हैं, जानने के लिए पढ़ें अगला अंक।)

अमृतबिंदु - पूज्य बापूजी

गुरु की नथनी नाक से, हृदय से निकालकर फेंक दें तो हम अनाथ हो जायेंगे। जैसे लावारिस माल सरकार का होता है, ऐसे ही अनाथ अंतःकरण फिर जो भी दूसरे जीव भटक रहे हैं उनके प्रभाव में आ जायेगा। जो आत्मवेत्ता गुरु के या भगवद्-तत्त्व के प्रभाव में नहीं रहता वह वस्तु, व्यक्ति और विकारों के प्रभाव में भटकेगा ही। यह बिल्कुल पक्की, पक्की, पक्की बात है ! इसको ब्रह्माजी भी अन्यथा नहीं कर सकते। जो एक परमात्मप्राप्त गुरु की, ब्रह्म की शरण छोड़ देता है उसे कइयों की शरण लेनी पड़ती है।

सद्गुरु की युक्ति को मूर्खता से त्यागो मत



पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में श्री योगवासिष्ठ महारामायण का पाठ चल रहा है : महर्षि वसिष्ठजी बोले : ''हे रामजी ! एक दिन तुम वेदधर्म की प्रवृत्तिसहित सकाम यज्ञ, योग आदिक त्रिगुणों से रहित होकर स्थित हो और सत्संग व सत्शास्त्र परायण हो तब मैं एक ही क्षण में दृश्यरूपी मैल दूर कर दूँगा। हे रामजी ! गुरु की कही युक्ति को जो मूर्खता से त्याग देते हैं उनको सिद्धांत प्राप्त नहीं होता।''



इन वचनों को सुनते ही पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सहसा निकल पड़ा : ''ओहो ! क्या बहादुरों-के-बहादुर हैं ! कैसे हैं भगवान श्रीराम के गुरुजी !

वसिष्ठजी महाराज कहते हैं कि ''सकाम भावना से ऊपर उठो तो एक ही क्षण में मैं दृश्यरूपी मैल दूर कर दूँगा अर्थात् परमात्म-साक्षात्कार करा दूँगा।''

जैसे लाइट फिटिंग हो गयी हो तो बटन दबाने पर एक ही क्षण में अँधेरा भाग जाता है। बटन दबाने में देर ही कितनी लगती है ? उतनी ही देर **आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस** (इसी दिन पूज्य बापूजी को आत्मसाक्षात्कार हुआ था) को लगी थी। दृश्य की सत्यता दूर हो गयी। गुरुजी को तो इतनी-सी देर लगी और अपना ऐसा काम बना कि अभी तक बना-बनाया है। इस काम को मौत का बाप भी नहीं बिगाड़ सकता।

गुरुजी की कही हुई युक्ति को, उपदेश को जो मूर्खता से सुना-अनसुना कर देते हैं उनको सफलता नहीं मिलती। गुरुजी की युक्ति, गुरुजी के संकेत को महत्त्व देना चाहिए। उत्तम सेवक तो सेवा खोज लेगा, मध्यम को संकेत एवं कनिष्ठ को आज्ञा मिलने पर वे सेवा करेंगे और कनिष्ठतर को तो आज्ञा दो फिर भी कार्य करने में आलस्य करेगा, टालमटोल करेगा। गुरु की युक्ति को महत्त्व न देना, उनके उपदेश का अनादर करना ऐसे दुर्गुण छोड़ते जायें तो सभी ईश्वरप्राप्ति के पात्र हैं। कुपात्रता छोड़ते जायें तो पात्र ही हैं। यह मनुष्य-जीवन ईश्वरप्राप्ति की पात्रता है लेकिन ये दुर्गुण पात्रता को कुपात्रता में बदल देते हैं। दुर्गुण छोड़े तो बस पात्रता ही है और दुर्गुण छोड़ने के पीछे मत लगे रहो, ईश्वरप्राप्ति के लिए लगो तो दुर्गुण छूटते जायेंगे। ईश्वरप्राप्ति का उद्देश्य बनायेंगे न, उद्देश्य ऊँचा होगा तो दुर्गुण छूटेंगे और सेवा भी बढ़िया हो जायेगी।'' ❑

(पृष्ठ २७ से 'बापूजी को बाहर...' का शेष)

हिन्दुओ ! जागो ! नहीं तो धीरे-धीरे कुचल दिये जाओगे। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि बापूजी जल्दी-से-जल्दी जेल से बाहर आयें और वास्तविकता संसार के सामने प्रकट हो।

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता) ❑

सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ

पुण्यदायी तिथियाँ व योग

१७ अगस्त : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२:४६ तक) (ध्यान, जप व पुण्यकर्म का लाख गुना फल)

१८ अगस्त : पुत्रदा एकादशी (पुत्र की इच्छा से इसका व्रत करनेवाला पुत्र पाकर स्वर्ग का अधिकारी भी हो जाता है।)

२२ अगस्त : रक्षाबंधन (इस दिन धारण किया हुआ रक्षासूत्र सम्पूर्ण रोगों तथा अशुभ कार्यों का विनाशक है। इसे वर्ष में एक बार धारण करने से मनुष्य वर्षभर रक्षित हो जाता है। - भविष्य पुराण)

२९ अगस्त : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि ११:२६ तक)

३० अगस्त : जन्माष्टमी (''२० करोड़ एकादशी व्रतों के समान अकेला जन्माष्टमी का व्रत है।'' - भगवान श्रीकृष्ण। जन्माष्टमी के दिन पूरी रात जागरण करके ध्यान, जप आदि करना महापुण्यदायी है।)

३ सितम्बर : अजा एकादशी (समस्त पापनाशक व्रत, माहात्म्य पढ़ने-सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल)

६ सितम्बर : सोमवती अमावस्या (सुबह ७:३९ से ७ सितम्बर सुबह ६:२२ तक) (तुलसी की १०८ परिक्रमा करने से दरिद्रता-नाश)

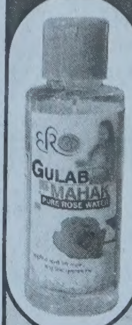
१० सितम्बर : गणेश चतुर्थी, चन्द्र-दर्शन निषिद्ध (चन्द्रास्त : रात्रि ९:२०) (इस दिन **'ॐ गं गणपतये नमः।'** का जप करने और गुड़मिश्रित जल से गणेशजी को स्नान कराने एवं दूर्वा व सिंदूर की आहुति देने से विघ्न-निवारण होता है तथा मेधाशक्ति बढ़ती है। इस दिन चन्द्र-दर्शन से कलंक लगता है। यदि भूल से भी चन्द्रमा दिख जाय तो उसके कुप्रभाव को मिटाने के लिए bit.ly/syamantakkatha इस लिंक पर दी गयी 'स्यमंतक मणि की चोरी की कथा' पढ़ें तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण के निम्नलिखित मंत्र → का २१, ५४ या १०८ बार जप करके पवित्र किया हुआ जल पियें।

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥)

१२ सितम्बर : रविवारी सप्तमी (शाम ५:२२ से १३ सितम्बर सूर्योदय तक)

(अधिक जानकारी हेतु आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर एवं समितियों में उपलब्ध कैलेंडर, डायरी लें।)

चिंता, चिड़चिड़ापन व तनाव कम करने हेतु



जो व्यक्ति स्नान करते समय पानी में (५ मि.ली.) गुलाबजल★ मिलाकर **'ॐ ह्रीं गंगायै ॐ ह्रीं स्वाहा।'** यह मंत्र बोलते हुए सिर पर जल डालता है, उसे गंगा-स्नान का पुण्य होता है तथा साथ ही मानसिक चिंताओं में कमी आती है और तनाव धीरे-धीरे दूर होने लगता है, विचारों का शोधन होने लगता है, चिड़चिड़ापन कम होता है तथा वह अपने-आपको तरोताजा अनुभव करता है।

★ यह आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से व समितियों से प्राप्त हो सकता है।

सौ गुना फलदायी 'शिवा चतुर्थी'

(१० सितम्बर)

भविष्य पुराण के अनुसार 'भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी का नाम 'शिवा' है। इस दिन किये गये स्नान, दान, उपवास, जप आदि सत्कर्म सौ गुना हो जाते हैं। इस दिन जो स्त्री अपने सास-ससुर को गुड़ के तथा नमकीन पूए खिलाती है वह सौभाग्यवती होती है। पति की कामना करनेवाली कन्या को विशेषरूप से यह व्रत करना चाहिए।' ❑



प्रश्न : भगवत्कृपा, संतकृपा और गुरुकृपा क्या है ?

पूज्य बापूजी : भगवत्कृपा है कि तुम्हें संसार फीका लगने लगे और भगवद्-शांति, भगवद्-ज्ञान, भगवद्-रस में सार दिखने लगे। कैसी भी मुसीबत या कठिनाई आ जाय, आर्तभाव से भगवान को पुकारो तो वे मुसीबत में से निकलने का रास्ता देते हैं।

भगवान कहते हैं :

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।

जो मुझे जिस भाव से, जैसा भजता है मैं उसको उसी भाव से फल देता हूँ। यह भगवत्कृपा है पर संतकृपा इससे कुछ विलक्षण है। भगवान को तो जिस भाव से भजो, जितना भजो उस भाव से उतनी कृपा देंगे परंतु संत को भजो चाहे न भजो, उनकी दृष्टि में आ जाओ और तुम्हारे को जो जरूरत है, तुम जो माँगो वह तो ठीक है लेकिन तुम्हारे को धीरे-धीरे फुसला के, पटा के, रेलगाड़ी चलाकर, प्रसाद फेंक के... कैसे भी करके संत तुमको चिन्मय सुख की तरफ ले जायेंगे। जिससे भगवान भगवद्-रस में तृप्त हैं, तुमको उस रसस्वरूप में पहुँचा देंगे। पिता की कृपा में अनुशासन होता है, माता की कृपा में ममता होती है किंतु माँ दया, कृपा करती है तो ममता से करती है, पिता कृपा करता है तो अनुशासन करके अपने काम-धंधे के योग्य बनाने की कृपा करता है और भगवान की कृपा में जो जैसा भजता है उसको वैसा ही फल मिलता है परंतु संत व सद्गुरु की कृपा में ऐसा होता है कि आप कृपा न चाहो तो भी वह बरसती रहती है। जितना भी ले सकता है ले और नहीं लेता है तो लेने योग्य भी बनाते जाते हैं।

संत की कृपा में प्रेम होता है, उदारता होती है क्योंकि संत भुक्तभोगी होते हैं - जहाँ तुम रहते हो वहीं से संत आये हैं तो संसार के दुःखों को, आपाधापी को, संसार में कैसा पचना होता है, कैसी बेवकूफी होती है, कैसा आकर्षण होता है, कैसी फिसलाहट होती है - इन सबको वे जानते हैं। इसलिए कैसा भी साधक हो... चलो, चलो, चलो - डाँटकर, प्यार करके, कुछ पुचकार के, न जाने क्या-क्या करके उठाते हैं और पहुँचा भी देते हैं। अब तुम जैसा भजो वैसा फल देने को संत नहीं तौलेंगे। 'तुम कैसे भी हो, हमको जो मिला है वह तुमको कैसे मिले' इस प्रयोजन से सारा आयोजन करेंगे, करायेंगे। यह संतकृपा ऐसी ऊँची होती है। मैंने कभी सोचा नहीं था कि मेरे गुरुजी मेरे को इतना ऊँचा पहुँचायेंगे।

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मङ्गलम् ।

मैं गुरुजी के पास गया तो मैं आशाराम बनूँ या मुझे ब्रह्मसाक्षात्कार हो ऐसा तो सोचा ही नहीं था। बचपन से भगवान की तड़प तो थी लेकिन समझता था कि 'शिवजी आयेंगे, दर्शन देंगे और बोलेंगे : 'क्या चाहिए ?' मैं बोलूँगा : 'कुछ नहीं चाहिए।' तो शिवजी प्रसन्न हो जायेंगे। हम समझते थे कि इसीको बोलते हैं भगवत्प्राप्ति। बाद में पता चला कि 'अरे, यह तो कुछ भी नहीं। इतनी मेहनत करो और भगवान आये, दिखे फिर चले गये तो अपन वैसे-के-वैसे।' गुरुजी ने ऐसी कृपा की कि पता चला शिवजी जिससे शिवजी हैं, विष्णुजी जिससे विष्णुजी हैं, ब्रह्माजी जिससे ब्रह्माजी हैं और दुनिया जिससे चेतना पाती है वही मेरा आत्मदेव है, यह सब मेरे आत्मदेव का ही विस्तार है।' मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था ऐसी ऊँची अवस्था में गुरुजी ने रख दिया। यह है गुरुकृपा !

स्पेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है । अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में
लके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है ।



त्रिफला चूर्ण व टेबलेट



ये आँखों की सूजन, लालिमा, दृष्टि की कमजोरी, कब्ज, मधुमेह (diabetes), मूत्ररोग, त्वचा-विकार, जीर्णज्वर व पीलिया में लाभदायक हैं ।

योगी आयु तेल



नाक और कान के रोगों में इसका उपयोग लाभदायी है ।

अच्युताय मलहम



यह दाद, खाज, खुजली आदि चमड़ी के रोगों तथा फंगल व बैक्टीरियल इन्फेक्शन में लाभकारी है, साथ ही पैरों की कटी-फटी एड़ियों के लिए बहुत उपयोगी है ।

बेल चूर्ण



यह चूर्ण आँव-मरोड़, कमजोर पाचनशक्ति व पेट की खराबी से बार-बार होनेवाले दस्त,
नी बवासीर एवं आँतों के घाव को दूर कर आँतों की कार्यशक्ति बढ़ाता है ।

संक्रमण एवं ऋतुजन्य समस्याओं से रक्षा व दीर्घायु हेतु











'ऋषि प्रसाद' की सदस्यता है कल्याणमय जीवन का प्रवेशद्वार

RNI No. 48873/9
RNP. No. GAMC 1132/
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto
Licence to Post without Pre-
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto
Posting at Dehradun G.P.O
1st to 17th of every mo
Date of Publication: 1st A





साधु-संतों, कुष्ठरोगियों व गरीबों में भंडारे



युवा सेवा संघ द्वारा भंडारे, नोटबुक वितरण, पर्यावरण सुरक्षा अभियान एवं शरबत



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

डाउनलोड करें "Rishi Prasad" व "Rishi Darshan" Apps - Google play Store